चन्दामामा
जुलाई १९८१

जीवन और हनु अचम्भित-

अपूर्व बुद्धिमत्ता

मानव का मस्तिष्क आकार तथा शक्ति दोनों ही में विशाल होता है और इसीलिये इसे अन्य जीवों से श्रेष्ठ माना जाता है। वह जो भी सोचता है या करता है उस पर उसके मन का ही नियंत्रण रहता है। चिन्तन, आई.क्यू. (बुद्धि अंक) क्षमता और स्मरण शक्ति का जहां तक सम्बन्ध है, हर व्यक्ति भिन्न भिन्न मन से अनुगृहीत है।

स्मरण-शक्ति विषयों को याद रखे रहने की शक्ति को कहते हैं। हमारे मन में स्मरण रखने की जबरदस्त क्षमता है। टर्की के **महम्मद हलीसी** ने 14 अक्टूबर 1967 को 6 घंटे में ही कुरान की 6,666 आयातें मुंहजबानी सुनाई थीं जो कि एक विश्व रिकार्ड है।

क्षमता किसी विशेष क्षेत्र में माहिर बनने की योग्यता है। 187 आई.क्यू. होने से **बाबी फिशर** (जन्म 9 मार्च, 1943) में शतरंज खेलने की असाधारण क्षमता है। 15 वर्ष की आयु में ही खिताब जीतकर वह अब तक के सबसे कम आयु के 'इन्टरनेशनल ग्रांडमास्टर' बन गये हैं।

आई.क्यू. एक व्यक्ति की वास्तविक आयु से उसकी बुद्धि-आयु के वर्षों में अनुपात को कहते हैं। इसे मानव बुद्धि का माप समझा जाता है। आई.क्यू. अंकों में नापा जाता है। 100 को औसत माना जाता है; 150 को प्रतिभाशाली समझा जाता है। आई.क्यू. में सबसे अधिक रिकार्ड दक्षिण कोरिया के **किम उंग-यॉंग** का है-210।

चिन्तन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें आपका मन महसूस करने, कार्य करने और योजना बनाने का कार्य करता है। अब तक के सबसे महान चिन्तकों में से एक यूनानी दार्शनिक **प्लेटो** (429-347 बी.सी.) था। उसका कहना था कि सत्य शाश्वत होता है।

जीवन बीमा आपके भविष्य को सुरक्षित बनाने का सबसे बुद्धिमतापूर्ण रास्ता है। इसके बारे में और जानकार हो जाइये।

भारतीय जीवन बीमा निगम

daCunha/LIC/107 HIN

सच तो ये है...
फ्लैश में मसूढ़ों को मजबूती देनेवाले तत्व कहीं ज़्यादा हैं.*

* ग्लीसरीन+सौरबिटॉल-दांतों पर मसूढ़ों की पकड़ मज़बूत करने के लिये

आज़माइये इसे...

...और खुद कायल हो जाइये. फ्लैश में है पिपरमिन्टी नीला मुखशोधक, जो दांतों में सड़न और बदबू लाने वाले बैक्टीरिया खत्म कर देता है. साथ ही इसमें है डी.सी.पी. (डाइकैल्शियम फॉस्फेट) जो आपके दांतों को चमकाता है.

ज़रा फ्लैश के स्वाद का मज़ा लीजिये, आखिर फ्लैश ही वह टूथपेस्ट है जिसने अपनी पिपरमिन्टी ताज़गी, मज़ेदार स्वाद और ऊंचे दर्जे के घटक तत्वों की बदौलत विश्व सिलेक्शन एवॉर्ड्स विएना में स्वर्ण पदक हासिल किया है.

फ्लैश टूथब्रश
दांतों को सही तरीके से साफ करने के लिये अनोखी बनावट, खास पकड़, और आयातित नायलॉन ब्रिसल्स के साथ ६ आकर्षक पारदर्शी रंगों में

टूथपेस्ट
फ्लैश अपनाइये-मुस्कान फैलाइये.

वर्ल्ड सिलेक्शन पारितोषिक विजेता

everest/80/FL/659-hn
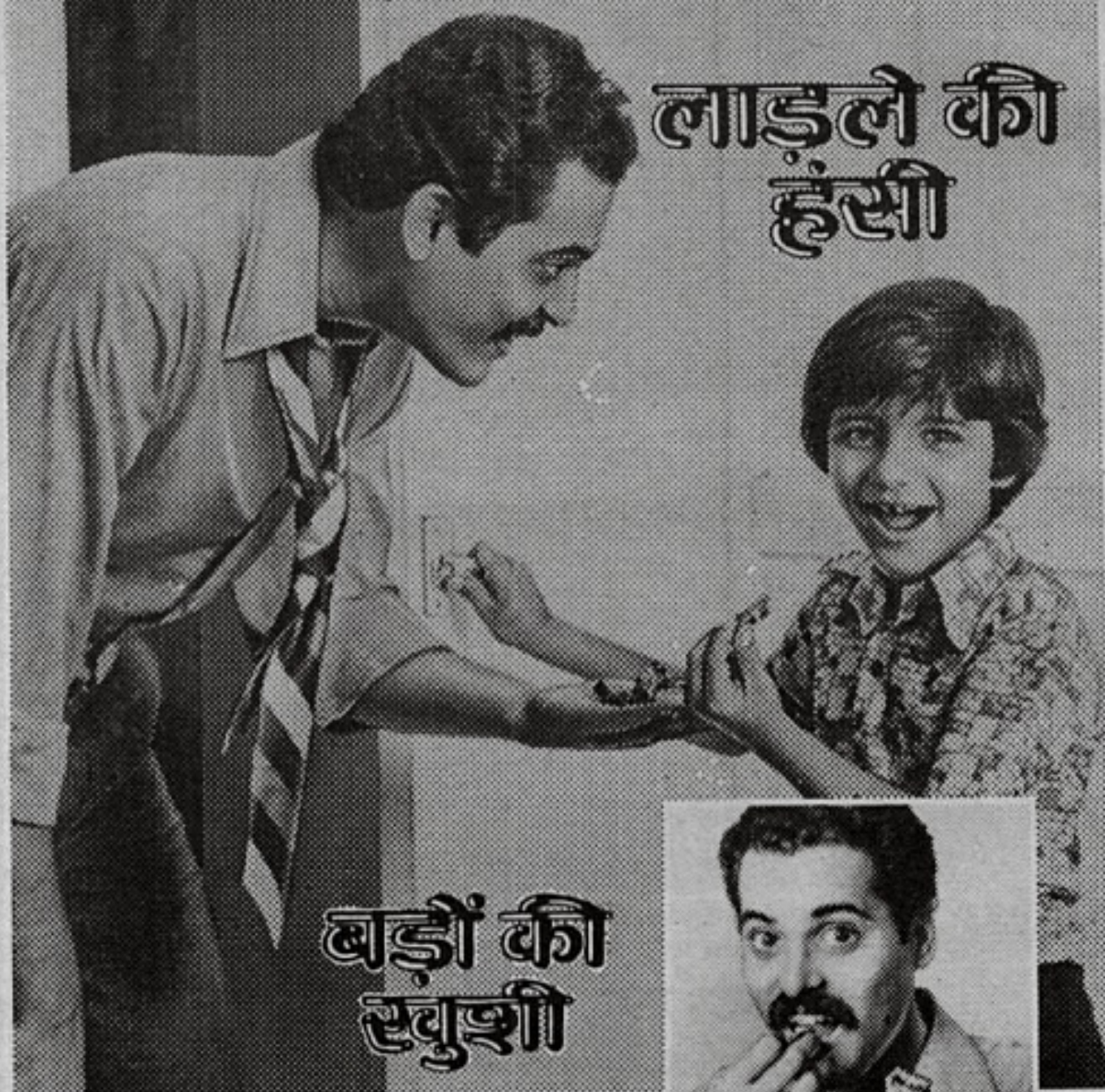
लाड़ले की हंसी
बड़ों की खुशी
आहा! कितनी ढेर चॉकलेट! मैं डैडी का राजा बेटा हूं न! इसलिये डैडी हमेशा मुझे मेरी मनपसंद रॉवलगांव की कोको और कोकोनट एक्लेयर्स लाकर देते हैं!
श श श...श श...आपको एक बात बताऊं! डैडी बड़े चालाक हैं... मेरी चॉकलेट में से अपने लिये भी थोड़ी सी छुपा लेते हैं...
अनोखा स्वाद! इसे चबाइये और चूसिये भी.
Ravalgaon Eclairs
Eclairs
Ravalgaon
दी रॉवलगांव शुगर फार्म लि. ए वालचंद ग्रुप इंडस्ट्री,
हेड ऑफिस : कन्स्ट्रक्शन हाउस, वालचंद हीराचंद मार्ग, बेलार्ड एस्टेट, बंबई ४०० ०३८.
Creative Unit-4628 H in.

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

इस महीने की बेताल कथा "पराजित गंधर्व" है ।

'बाढ़-पीड़ित' नामक कहानी के द्वारा हमें यह मालूम होता है कि एक ही व्यक्ति के द्वारा जनता पर संपूर्ण अधिकार चलानेवाली राजनैतिक व्यवस्था में अगर राजा कोई भूल कर बैठते हैं, तो उसे सुधारने के लिए उन्हें और कई भूलें करनी पड़ती हैं ।

अमर वाणी

जीर्यन्ते जीर्यतः केशाः, दंता जीर्यंति जीर्यतः ।
जीर्यतः चक्षुषी श्रोत्रे, तृष्णैका तरुणायते ॥

[मानव की वृद्धावस्था में उसके बाल झर जाते हैं, दांत गिर जाते हैं, आँखें ठीक से दिखाई नहीं देतीं, कान सुनाई नहीं पड़ते, फिर भी उसके भीतर की आशा नित नवीन होती है ।]

वर्ष : ३३ जुलाई १९८१ अंक : ११

एक प्रति : १-७५ :: वार्षिक चन्दा : २१-००

बाढ़-पीड़ित

चन्द्रपुर के राजा प्रताप ने एक बार झूठी शिकायत सुनकर एक निर्दोष व्यक्ति को मौत की सजा दी। इसके बाद सच्ची बात प्रकट हो गई, मगर तब तक उस निर्दोष व्यक्ति को फांसी के तख्ते पर लटकवाया गया। इस घटना ने राजा के दिल को विकल बनाया। उस दिन से वे झूठी शिकायतें सुनते न थे। साथ ही कोई उनसे फ़रियाद करते तो कठिन दण्ड देते थे। उन्होंने यह कानून बनाया कि किसी को दूसरों की बुराई नहीं करनी चाहिए।

इस संबंध में मंत्री ने एक बार राजा को यों सचेत किया–"महाराज, दूसरों की बातें सुनना कोई गलत काम नहीं है, पर सुनने के बाद भले-बुरे का विचार किये बिना उन पर विश्वास करना गलत है। अगर आप लोगों की फ़रियादें नहीं सुनेंगे तो देश में भ्रष्टाचार फैल जाएगा!"

"मेरे राज्य में जो व्यक्ति भ्रष्टाचार का शिकार होता है, वह कानून का तिरस्कार करने वाला माना जाएगा। मेरे दरबार के सभी अधिकारी विश्वासपात्र हैं! उन पर मेरा गहरा विश्वास है।" राजा ने उत्तर दिया।

एक बार देश के एक प्रांत में भारी वर्षा हुई। नदी के किनारे बसे वीरवर, धीरवर और शूरवर नामक गाँव बाढ़ के शिकार हो गये। कई लोगों के मकान गिर गये, बहुत सारी जायदाद नष्ट हो गई।

राजा प्रताप खुद जाकर उन गाँवों को देख आये। उसे देख राजा का दिल व्याकुल हो उठा। इस पर राजा ने उन तीनों गाँवों के लिए तीन विशेष अधिकारियों को नियुक्त किया और प्रत्येक के हाथ एक-एक लाख रुपये देकर जनता की मदद करने का आदेश दिया। राजा का आदेश पाकर

वीरवर में वीरसेन, धीरवर में धीरसेन और शूरवर में शूरसेन पहुँचे।

वीरवर गाँव के लोग बहुत ही भोले-भाले थे। वीरसेन ने उस गाँव में अपने लिए एक बहुत बड़ा मकान बनवा लिया, कम मूल्य पर उपजाऊ जमीन खरीदी और अपने रिश्तेदारों को वहाँ पर बुलवा भेजा। पर गाँव के बाक़ी सभी लोग मज़दूर बन गये।

धीरवर में एक दुष्ट व्यक्ति था जो वहाँ की जनता को लूटता था। धीरसेन ने उस गाँव में जाकर उस दुष्ट से दोस्ती कर ली और दोनों उस गाँव को बांटकर राजा से प्राप्त धन से ऐश-आराम करने लगे। वहाँ की जनता भी राजा से प्राप्त सहायता के बारे में जानती न थी।

शूरवर नामक गाँव को कुबुद्धि और दुर्बुद्धि नामक दो अत्याचारी लूटा करते थे। शूरसेन ने वहाँ पर जाकर उन दुष्टों से मैत्री कर ली और उस गाँव को तीन भागों में बाँट कर वे लोग मजे में अपने दिन बिताने लगे।

बाढ़ से पीड़ित उन तीनों गाँवों की हालत का पता मंत्री यथा समय लगाते रहे। उन्हें वहाँ से जो समाचार मिलते थे, उन्हें सुनकर मंत्री व्याकुल थे। एक दिन मंत्री ने राजा से निवेदन किया—"महाराज,

आप ने तीन गाँवों के लिए तीन लाख रुपयों की सहायता दी। ऐसी हालत में यह बात जान लेना उचित होगा कि उस धन का उपयोग कैसे हुआ है?"

"अच्छी बात है। किसी योग्य व्यक्ति को भेजकर इसका पता लगवा लीजिए, मगर वे लोग वहाँ के अधिकारियों पर दोषारोपण करने का प्रयत्न करेंगे तो उन्हें कड़ी सजा दी जाएगी।" राजा ने चेतावनी दी।

इसके बाद मंत्री ने चमत्कार नामक एक व्यक्ति को उन गाँवों की हालत का पता लगाने भेजा। उसने लौटकर वहाँ का हाल बताया, इस पर मंत्री बोले—"मैंने

कभी नहीं सोचा था कि उन गाँवों की हालत ऐसी खराब है। कोई भी राजा से शिकायत नहीं कर सकते, इसलिए अधिकारियों की स्वेच्छाचारिता बढ़ती जा रही है। यदि यही हालत रही तो देश में विद्रोह के फैलने में ज़्यादा समय न लगेगा। मेरी समझ में नहीं आता कि राजा को मैं इसका पता कैसे दूं?"

चमत्कार ने बताया कि वह बड़ी युक्ति के साथ राजा को इसका परिचय देगा। इस पर मंत्री ने उसे सावधान करते हुए बताया—"जैसी तुम्हारी इच्छा! लेकिन याद रखो, राजा को अगर गुस्सा आएगा तो तुम्हें कड़ी सजा मिलेगी! खबरदार!"
"महानुभाव, देश के कल्याण के वास्ते ऐसे खतरे को मोलने में पीछे हटना नहीं चाहिए!" चमत्कार ने जवाब दिया!

इसके बाद चमत्कार ने जाकर राजा के दर्शन किये। राजा ने उससे पूछा—"बताओ, तीनों गाँवों का हाल कैसा है?"

"प्रभू! आप की मेहर्बानी से सारा इंतजाम ठीक से हो गया है! यदि आप नाराज न होंगे तो मैं एक बात निवेदन करना चाहता हूँ।" चमत्कार ने कहा।

"अगर तुमने किसी अधिकारी पर दोषारोपण किया तो तुम्हें कड़ी सजा मिलेगी।" राजा ने धमकी दी।

"प्रभू! दोषारोपण करने की कोई बात नहीं है, लेकिन वहाँ पर मुझे एक कमी दिखाई दी। मैं समझता हूँ कि यह

कमी आप ही के जरिये हुई होगी।" चमत्कार ने हिम्मत के साथ कहा।

"बताओ, मैं अपनी कमियों को सुधारने के लिए हमेशा तैयार बैठा हुआ हूँ।" राजा ने गर्व के साथ कहा।

"महाराज, मेरी अल्प बुद्धि को ऐसा मालूम होता है कि वीरवर की तुलना में धीरवर के साथ और इन दोनों की तुलना में शूरवर गाँव के प्रति बड़ा अन्याय हो गया है!" चमत्कार ने कहा।

"अबे, यों बात को घुमा-फिरा कर मत कहो, साफ़-साफ़ बतला दो।" राजा ने खीझकर कहा।

"महाराज, वीरवर में बाढ़ पीड़ित व्यक्ति एक ही है। उस गाँव को आप ने एक लाख रुपये दिये; आपकी उदारता की तारीफ़ वहाँ के लोग मुक्त कण्ठ से कर रहे हैं। धीरवर में तो दो बाढ़-पीड़ित हैं। वास्तव में उस गाँव को दो लाख रुपये मिलने थे, लेकिन आप ने एक ही लाख रुपये दिये। शूरवर में तो तीन बाढ़-पीड़ित हैं, फिर भी उस गाँव को आप ने एक ही लाख रुपये दिये। एक-एक बाढ़-पीड़ित को एक सौ रुपये भी देते तो वही बड़ी बात हो जाती। ऐसी हालत में आप ने एक एक बाढ़-पीड़ित व्यक्ति को तीस हज़ार से ज़्यादा रुपये दिये, लेकिन मेरा विचार है कि सब लोगों को बराबर रुपये दिये होते तो ज़्यादा अच्छा होता!" चमत्कार ने सुझाया।

"अरे मूर्ख, मैंने स्वयं देखा है. उन गाँवों में सैकड़ों बाढ़-पीड़ित लोग हैं! तुमने तीनों गाँवों में कुल छे बाढ़-पीड़ित बताये। क्या तुम्हारा दिमाग ख़राब तो नहीं हुआ है?" राजा प्रताप ने पूछा। चमत्कार बोला–"महाराज, मान लीजिए, आप ने एक महात्मा का सम्मान करने के लिए एक माला तैयार कराई है। उस माला को आप खुद जिसके गले में डाल दें, उसीको तो हम महात्मा समझेंगे।"

"हाँ, हाँ! तुम ठीक कहते हो।" राजा ने कहा।

"इसी प्रकार आप ने बाढ़-पीड़ितों के वास्ते कुछ धन दिया, वह जिसे प्राप्त होगा, उसीको हम बाढ़-पीड़ति मानेंगे?" चमत्कार ने कहा।

"माने?" राजा ने पूछा।

"महाराज, आप तो फ़रियादें और शिकायतें तो नहीं सुनते। आपके अधिकारी विश्वास पात्र हैं! मैं तीनों बाढ़।पीड़ित गाँवों में घूम आया हूँ। आपने बाढ़पीड़ितों के वास्ते जो धन दिया है, वह वीरवर में एक आदमी को, धीरवर में दो आदमियों को और शूरवर में तीन आदमियों को प्राप्त हुआ है। इस वजह से मैंने सोचा कि ये ही छे लोग सच्चे बाढ़-पीड़ित हैं।" चमत्कार ने विनयपूर्वक जवाब दिया।

राजा के मन में संदेह हुआ कि इसके पीछे कोई रहस्य छिपा हुआ है। यों सोचकर राजा ने गुप्त रूप से तीनों गाँवों में जाकर खुद जान लिया कि वहाँ के अधिकारियों ने कैसे अन्याय किये हैं, इस पर वे बहुत दुखी हुए। इसके बाद उन तीनों गाँवों के वास्ते राजा ने नये सिरे से मदद पहुँचाई और उन दुष्टों को कड़ी सजा दी। इसके बाद राजा ने फिर से जनता की शिकायतें सुनना शुरू किया।

राजा के भीतर परिवर्तन लाने वाले चमत्कार का मंत्री ने सम्मान किया। उस दिन से यह परिपाटी सी हो गई कि जो भी सरकारी धन का दुरुपयोग करता, उसे बाढ़-पीड़ित कहा जाने लगा।

[१४]

[समरसेन शिवदत्त के सैनिकों के साथ उसके गाँव की ओर चल पड़ा। उस गाँव के समीप पहुँचते ही उन लोगों ने देखा कि व्याघ्रदत्त के सैनिक उस गाँव को जला रहे हैं। वहाँ पर शिवदत्त के एक अनुचर ने उन्हें बताया कि शिवदत्त भाग गया है। उसकी खोज में निकलकर समरसेन पहाड़ों के बीच फंस गया। बाद-]

समरसेन एक भारी शिला के पीछे छिप कर हाथी की ओर देख रहा था। उसके साथ रहने वाले सैनिक जान हथेली पर रखकर कांप रहे थे। हाथियों का एक झुंड अचानक उस सुरंग में घुसकर शायद उन्हें कुचल दे, इस बात का उन्हें डर था। वे एक ऐसे संकरीले प्रदेश में ऐसे फँस गये थे, जहाँ से भागना मुमकिन न था।

उस हालत में समरसेन और सैनिकों को एक साथ तीन-चार आदमियों के चीखने जैसा आर्तनाद सुनाई दिया। वह ध्वनि गुफा के उस पार हो रही थी। पर वे लाग अपनी जगह से हिलने से डरते थे। वे अपने आगे के कर्त्तव्य के बारे में सोच ही रहे थे, तभी हाथी ने चारों ओर सर घुमाकर देखा, जोर से चिघाड़ते हुए उस सुरंग में घुस पड़ा, जिसमें से समरसेन और

सैनिक निकल आये थे। थोड़ी देर में ऐसी आवाज़ उन्हें सुनाई दी कि वह हाथी जल-प्रपात से होकर कहीं दूसरी दिशा में जा रहा हो।

सबसे पहले समरसेन बाहर आया, तब उसके पीछे सैनिक भी चले आये। गुफा के उस पार से निकलने वाला आर्तनाद जब-तब सुनाई दे रहा था।

एक सैनिक बोला–"ऐसा मालूम होता है कि क़ोई आदमी बड़ी प्राण घातक आफ़त में फंस गया है।"

"इसमें कोई संदेह नहीं है। लेकिन हाथी ऐसे अचानक क्यों भाग आया होगा? कहीं यह हमारे वास्ते बिछाया गया जाल तो नहीं है? यह सचमुच आर्तनाद है या..." समरसेन यों अपने विचार बता ही रहा था कि गुफा के उस पार से कोलाहल की ध्वनि सुनाई दी।

समरसेन ने सोचा कि अब चुप बैठे रहने से कोई फ़ायदा नहीं है। गुफा के उस पार चाहे शत्रु हो या मित्र, वे ज़रूर खतरे में फंस गये हैं। इसलिए हिम्मत के साथ आगे बढ़कर उस हालत का परिचय पाना ज़रूरी है!

इस निर्णय पर पहुँचने के बाद समरसेन अपने सैनिकों को सचेत कर आगे बढ़ा। एक संकरीले सुरंग में थोड़ी दूर आगे बढ़ने पर सुरंग द्वार से लगकर एक बड़ा तालाब दिखाई दिया। उस तालाब में बरगद की जटा वाले जैसे पेड़ थे और उसमें सरपत उगी थी।

समरसेन ने थोड़ी दूर और आगे बढ़ने पर देखा कि तीन आदमी घुटनों तक के जल की गहराई में खंभों से बंधे हुए हैं। समरसेन को देखते ही वे और जोर-शोर से आर्तनाद करने लगे।

सच्ची हालत का पता समरसेन या उसके साथियों को न था। यह भी प्रतीत हो रहा था कि खंभों से बंधे हुए व्यक्तियों के प्राणों के लिए तत्काल कोई खतरा नहीं है। क्योंकि उनके चारों तरफ़ कोई प्राणी

न था। इसलिए समरसेन को इस बात का आश्चर्य हुआ कि उन्हें देखने के बाद भी वे लोग क्यों ऐसे जोर-शोर से चिल्ला रहे हैं।

खंभे से बंधे हुए लोगों तक पहुँचना हो तो समरसेन को पानी में उतर कर थोड़ी दूर चलना था। सरपत को देख समरसेन ने अंदाज़ा लगाया कि तालाब ज़्यादा गहरा नहीं है। इस पर समरसेन तलवार और तरकस को सावधानी से संभाल कर पानी में उतरा। सैनिक उसका अनुसरण करते हुए चल रहे थे। वे लोग तालाब में थोड़ी ही दूर चले थे कि कान के पर्दों को फाड़ने वाली जैसी भयंकर आवाज़ आई। यह चिल्लाहट उन तीनों बंदियों की थी। उसी क्षण तालाब के जल में जोरदार हलचल मचने लगी।

समरसेन एकदम चकित रह गया। सामने से एक बहुत बड़ा मगर-मच्छ मुँह बाये उनकी तरफ़ बढ़ चला आ रहा था। उस मगरमच्छ को देखते ही बंदियों के आर्तनादों का कारण पल-भर में समरसेन ने भांप लिया।

तलवार को म्यान में रखकर समरसेन ने धनुष पर बाण चढ़ाया। मगर-मच्छ पूँछ हिलाते मुँह खोले, दाढे बढ़ाकर तेजी के साथ आगे चला आ रहा था। उसको निशाने की परिधि में आने पर समरसेन ने उसके मुँह में बाण का निशाना बनाकर छोड़ दिया। बाण के आघात से

न रही। वे तीनों उसीके अनुचर थे जो व्याघ्रदत्त के द्वारा उसके बन्दी होने तक उसके साथ ही रहे थे, पर उसका चौथा सैनिक कहाँ? वे तीनों सैनिक भी समरसेन को पहचानने पर ख़ुशी से उछल पड़े। अप्रत्याचित रूप में न केवल उनके प्राण बच गये, साथ ही वे अपने नेता से भी मिल गये।

"सेनापति जी, हमने कभी न सोचा था कि हम फिर से आपके दर्शन कर सकेंगे।" एक सैनिक ने कहा।

"वह चौथा सैनिक कहाँ?" समरसेन ने पूछा।

"उसी को इसी मगरमच्छ ने निगल डाला है। आप वक़्त पर पहुँचे, वरना हम भी उसके मुँह में चले जाते!" तीनों सैनिक एक स्वर में बोले।

"तुम लोगों को यहाँ पर खंभों से किसने बांध दिया?" समरसेन ने कुतूहल पूर्वक पूछा।

सैनिकों ने संक्षेप में सारी बातें बताईं। तब इतमीनान से बोले–"हम लोग आपकी खोज करते गुफा के गुप्त द्वार से इस प्रदेश में आये। यहाँ पर व्याघ्रदत्त के सिपाहियों ने हमें बन्दी बनाया और अपने नेता के आदेश पर हमें इस तालाब के मगर-मच्छों का आहार बनाकर चले गये।

मगरमच्छ चीखते-चिल्लाते पानी में छटपटाने लगा। फिर संभलकर आगे बढ़ा। उस वक़्त उसकी आँखें क्रोध से लाल थीं और भयंकर लग रही थीं।

इस बार समरसेन ने मगरमच्छ पर तलवार का वार किया और उसकी पीठ पर अपनी सारी ताक़त लगाकर दो बार तलवार घुसेड़ दी। प्राणघातक मार खाकर मगरमच्छ पानी में छटपटाने लगा। तब तक भयकंपित हो आँखें तरेर कर देखने वाले बन्दियों की जान में जान आ गई।

समरसेन उनके समीप पहुँचा। उनके चेहरे देखते ही उसकी ख़ुशी की कोई सीमा

वे लोग थोड़े समय पहले ही हमें यहाँ बांध कर चले गये हैं, उन पेड़ों के पीछे जाकर देखने से शायद उनके जाने का रास्ता मालूम होगा।"

इस पर सबने वहाँ के वृक्षों के पीछे जाकर देखा। व्याघ्रदत्त अपने सिपाहियों के साथ क़तार बांधकर आगे बढ़ते दिखाई दिया। समरसेन ने व्याघ्रदत्त के दल को देखते ही क्रोध के मारे दांत किटकिटाये। पर दूसरे ही क्षण उसके मन में यह विचार आया कि उसके पास जो थोड़े से सैनिक हैं, उनकी मदद से दुश्मन का लोहा लेना मुमकिन नहीं है। इसलिए सबसे मुख्य बात तो शिवदत्त का पता लगाकर उससे मिलना है।

समरसेन यों विचार कर ही रहा था इतने में एक सैनिक धीरे से चिल्लाकर पेड़ों की डालों की ओर इशारा करने लगा। वहाँ पर एक डाल पर कोई कागज़ लटक रहा था। समरसेन ने आश्चर्य में आकर उस कागज़ को अपने हाथ में लिया और उसे खोलकर देखा। उसमें यों लिखा हुआ था: "यह प्रदेश अत्यंत खतरनाक है। जल्द ही इस प्रांत को छोड़कर चले जाइये।"

समरसेन ने समझ लिया कि यह शिवदत्त की ही चेतावनी है। ऐसा लगता था कि वह चिट्ठी जल्दबाजी में लिखी गई है। समरसेन ने अपने मन में यह दृढ़ निश्चय कर लिया कि तत्काल वहाँ से निकल जाना उत्तम होगा।

पहले उसने विचार किया कि जिस रास्ते से वह यहाँ तक पहुँच गया है, उसी रास्ते से लौट जाय! पर एक सैनिक समीप की गुफा की ओर हाथ का इशारा करते हुए बोला—"महानुभाव, उधर देखिये, एक अस्पष्ट पगडंडी दिखाई दे रही है जिस पर कई आदमी शायद एक साथ पैदल चलकर गये हैं!"

समरसेन ने वहाँ की घास और कंकड़ों को परख कर देखा। उसे लगा कि सैनिक

C HITRA

की बातों में सचाई है। उसे यह भी संदेह हुआ कि कहीं शिवदत्त इसी रास्ते से चल कर गये हो।

इसके बाद समरसेन ने गुफा के पास जाकर उसके अन्दर झांककर देखा। सारी गुफा अंधकार से भरी थी। एक सैनिक ने मशाल जलाया। उस रोशनी में सब लोग आगे बढ़े।

थोड़ी दूर और आगे जाने पर उन्हें जो दृश्य दिखाई दिया, वह अत्यंत डरावना और आश्चर्यजनक था! एक जगह शिला में तराशा गया सिंहासन था और उसके चारों तरफ़ मानवाकृति में गढ़ी गई अनेक मूर्तियां थीं। उनकी आकृतियों और हथियारों को देखने पर वे जंगली जाति की प्रतीत हो रही थीं।

"यह किसी जंगली जाति के नेता की समाधि होगी। चाहे जो हो, पर मैंने आज तक ऐसे भयंकर प्रदेश को कहीं नहीं देखा है! इन जंगली जातियों की भयंकर मूर्तियों को देखने पर जो डर लगा था, उससे कहीं ज्यादा डर मालूम होता है!" समरसेन ने कहा।

अपने नेता के मुंह से ये बातें सुन सैनिक अत्यंत भयभीत हुए। वे घबराकर एक दूसरे के चेहरे ताकने लगे। एक सैनिक इतना डर गया कि वह पीछे मुड़कर भागने लगा।

समरसेन ने अप्रयत्न ही जो बातें कह डालीं, उस पर वह खुद पछताने लगा। वास्तव में नेता को कभी खतरनाक हालत में भी अपने भयभीत होने की ख़बर प्रकट होने नहीं देनी चाहिए।

इसके बाद समरसेन बाकी सैनिकों को ढाढ़स बंधवा कर गुफा के द्वार की ओर चल पड़ा। उसे लगा कि उस प्रदेश को जितनी जल्दी हो सके, उतनी जल्दी छोड़ कर जाने में उसकी तथा उसके सैनिकों के लिए ख़ैरियत है! उसे शिवदत्त का पता लगाने में बड़ा कठिन मालूम होने लगा। आखिर सोचा कि शिवदत्त की बात भुला कर वह उसी जगह

चला जाय जहाँ से वह निकल पड़ा था। पर वहाँ की हालत उसके वास्ते बिलकुल अनुकूल नहीं है। एक ओर एकाक्षी मांत्रिक का खतरा और दूसरी तरफ़ द्रोही कुंभांड की झंझट।

आखिर समरसेन इस निश्चय पर पहुँचा कि सारी तक़लीफ़ें उठाकर शिवदत्त से मिलना ही समुचित होगा। शिवदत्त अकेला ही जानता था कि देवी के द्वारा प्रदत्त त्रिशूल कहाँ पर है! वह त्रिशूल एकाक्षी मांत्रिक तथा चतुर्नेत्र के गुरु शाक्तेय का था। इसलिए उसकी शक्ति अपार और अद्भुत होगी!

देर तक सोचने पर समरसेन को शिवदत्त का व्यवहार भी संदेह पैदा करने लगा। दर असल वह उसका मित्र है या वैसा अभिनय कर रहा है।

यह बात सच है कि नाव पर की संपत्ति और उसकी रक्षा करने वाली नागकन्या के रहस्य ये सब लोग जानते हैं। एकाक्षी मांत्रिक तथा चतुर्नेत्र के साथ व्याघ्रदत्त और शिवदत्त भी उन्हें पाने का प्रयत्न कर रहे हैं! इसलिए समरसेन ने सोचा कि इन सबके विवाद और झगड़ों के बीच में अपना सर क्यों फोड़ लूं?

यों सोचते हुए समरसेन गुफा के भीतर से बाहर आया। वह यह निर्णय करना चाहता था कि किस ओर बढ़े, तभी जोर की चिल्लाहट और पुकारें सुनाई देने लगीं। इसके कुछ क्षण बाद भाले व बाण आकर उनके निकट गिरने लगे।

"दुश्मन आ रहा है! तुम लोग शिलाओं के पीछे जाकर छिप जाओ।" यों अपने सैनिकों को चेतावनी देकर समरसेन समीप के टीले की ओर दौड़ने लगा।

दूर पर पहाड़ी शिलाओं पर खड़े हो बाणों की वर्षा करने वाले कुछ सैनिक समरसेन को दिखाई दिये। वह सोचने लगा–"ये लोग कौन हैं? व्याघ्रदत्त के सैनिक या कुंभांड के जंगली जाति के अनुचर?"

(और है)

पराजित गंधर्व

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया। पेड़ से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा, तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन, आपको इस प्रकार श्रम करते देख मुझे रहम आती है। शारीरिक शक्ति में मनुष्य देवताओं की समता नही कर सकते; लेकिन बुद्धि-बल में कुछ लोग देवताओं से कहीं आगे बढ़ गये हैं। मैं ऐसे एक व्यक्ति की कहानी सुनाता हूँ; श्रम को भुलाने लिए सुनिये।"

बेताल यों सुनाने लगा–"प्रगल्भ नामक एक गंधर्व पृथ्वी के विचित्र दृश्यों को देखते आसमान में उड़ रहा था, उसे जंगल में एक मनुष्य दिखाई दिया। वह दुबला-पतला था और उसके कपड़े फटे-पुराने थे। एक पेड़ से गिरे हुए फलों को चुनते हुए जब-तब चारों ओर सहमी हुई दृष्टि डाल

वेताल कथाएँ

कर देख रहा था कि कहीं से कोई खूंख्वार जानवर उस पर हमला कर बैठे ।

उस गरीब पर गंधर्व को दया न आई, उल्टे उसने अपने लोक के सारे ऐश्वर्य का समाचार सुनाया, साथ ही उसके मन में यह इच्छा पैदा हुई कि अपनी सारी अपूर्व शक्तियों का प्रदर्शन कर आनंद उठावे ।

इस विचार के पैदा होते ही गंधर्व आसमान पर से उस गरीब के सामने आ उतरा । गरीब आदमी ने घबराकर पूछा– "महाशय, आप देखने में मानव जैसे नहीं लगते ! आप कौन हैं ?"

गंधर्व ने बताया कि वह गंधर्व लोक से चला आ रहा है, फिर उस लोक में वह जो कुछ सुख भोग रहा है, सारा वृत्तांत सुनाकर बोला–" चाहे तुम्हारा नाम जो भी हो, तुम तो देखने में जन्मजात दरिद्र मालूम होते हो । मेरा नाम प्रगल्भ है और मैं अनेक अपूर्व शक्तियाँ रखता हूँ ।"

ये बातें सुन गरीब आदमी मंद मंद मुस्कुराया, तब बोला–" अपूर्व शक्तियों के होने से प्रयोजन ही क्या है ? क्या मैंने उन्हें कभी देखा है ? उन शक्तियों का प्रदर्शन करके दिखाओ तो सही कि तुम क्या-क्या कर सकते हो ?"

गंधर्व नाराज़ होकर बोला–" बताओ, मैं क्या करूँ ? अगर तुम्हारे कहे अनुसार मैंने नहीं किया तो अपनी हार मानकर तुम्हें सभी प्रकार की संपत्तियाँ दे जाऊँगा । यदि तुम हार गये तो मैं तुमको कुत्ते के रूप में बदल डालूँगा ।"

दरिद्र ने गंधर्व की शर्त मान ली और समीप का एक पेड़ दिखाकर बोला–" क्या तुम अपनी अपूर्व शक्तियों के द्वारा इसे हाथी के रूप में बदल सकते हो ?"

गंधर्व नें उसी क्षण उस पेड़ की ओर हाथ उठाकर कुछ कहा, आश्चर्य की बात थी कि दूसरे ही क्षण वह पेड़ हाथी के रूप में बदलकर चिघाड़ते वहाँ से चला गया ।

"ओह ! अद्भुत है !" यों कहते गरीब ने तालियाँ बजाई । गंधर्व ने दर्प से

पूछा–"बोलो, कुछ और करके दिखाना है?"

गरीब आदमी गंधर्व को अपने घर ले गया। वह एक झोंपड़ी थी। गरीब ने उस झोंपड़ी को एक सुंदर महल में बदलने की इच्छा प्रकट की। गंधर्व ने पल-भर में उसे एक महल के रूप में बदल डाला।

इसके बाद गरीब ने अपने लंगड़े भाई को दिखाकर गंधर्व से पूछा कि उसके लंगड़ेपन को दूर करे। गंधर्व की शक्ति के द्वारा उसका लंगड़ापन जाता रहा। इसे देख गरीब आदमी अपने छोटे भाई के कंधे पर थपकी देते हुए जोर से हँस पड़ा। गंधर्व ने नाराज़ होकर कहा–"अब तक तुमने जो कुछ पूछा, मैंने करके दिखाया। तुम्हारी बातों से मुझे ऐसा लगता है कि तुम मीठी बातों से मुझे दगा देकर फ़ायदा उठाना चाहते हो! मैं कोई भोला-भाला नहीं हूँ!" यों कहकर गंधर्व ने पल-भर में उस महल को झोंपड़ी में तथा गरीब के भाई को लंगड़े के रूप में बदल डाला।

गरीब भौंचक्का रह गया। इस पर गंधर्व खुशी के मारे नाचते हुए बोला–"मैंने अपनी अपूर्व शक्ति के द्वारा तुम्हारी सभी इच्छाओं की पूर्ति की। अब तुम हार गये हो न? मैं तुमको कुत्ते के रूप में बदलकर चला जाऊँगा।"

ये बातें सुन गरीब आदमी बोला–"अभी आपकी परीक्षाएँ पूरी कहाँ हुईं? अगर

आप यह एक काम पूरा कर सकेंगे तो मैं समझ लूँगा कि आप जीत गये हैं।"

"अच्छी बात है! आखिरी परीक्षा भी ले लो।" गंधर्व ने कहा।

"वैसे कोई खास बात नहीं है! आप अपनी अपूर्व शक्तियों का प्रयोग करके मुझे आपके जैसे और आपको मेरे जैसे बदलने लायक़ कर दीजिए!" गरीब ने अंतिम इच्छा प्रकट की।

गंधर्व पल-दो पल सोचता रहा, तब कांपते स्वर में बोला–"मैं हार गया हूँ।" यों कहकर उसने गरीब की झोंपड़ी को सुंदर महल के रूप में बदल डाला और उसके भाई के लंगड़ेपन को दूरकर वहाँ से चला गया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा–"राजन, मुझे एक संदेह है। ऐसी अपूर्व शक्तियाँ रखने वाला गंधर्व गरीब की आखिरी इच्छा जानकर क्यों कांप उठा? और उसने अपनी हार क्यों मान ली? इस संदेह का समाधान जानकर भी न देंगे तो आप का सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा!"

इस पर विक्रमार्क ने जवाब दिया–"ऐसी अपूर्व शक्तियाँ रखने वाले गंधर्व का एक गरीब के हाथों में हार जाने का मतलब उसमें बौद्धिक बल और अक़्लमंदी का न होना है। बल्कि अपने को बड़े मेधावी मानने का अहंकार है; और साथ ही उसका यह गलत अंदाजा भी है कि गरीब दीखने वाला यह व्यक्ति एकदम भोला-भाला है। गरीब की अंतिम इच्छा ने गंधर्व के अहं पर चोट की और उसे सोचने के लिए प्रेरित किया। गरीब की इच्छा की पूर्ति करने का मतलब है, गंधर्व की सारी शक्तियों को उसे सौंप देना। ऐसी हालत में गरीब व्यक्ति गंधर्व को कुत्ते के रूप में बदल सकता है! इस रहस्य को भांपकर गंधर्व ने गरीब को समस्त प्रकार की संपत्तियाँ देकर उसके भाई के लंगड़ेपन को दूर किया और वहाँ से वह चुपचाप चला गया।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

जिम्मेदारी

रामशर्मा विजयनगर में एक छोटी सी नौकरी करता था। उसके परिवार में उसकी पत्नी व बेटी के साथ उसकी भतीजी भी रहती थी। रामशर्मा के छोटे भाई की पत्नी का अचानक देहांत हुआ। इस पर उसकी देख-भाल करने वाली कोई औरत न थी। इसलिए रामशर्मा उस लड़की को अपने घर ले आया था। रामशर्मा की पत्नी अपने देवर की बेटी की भी अपनी बेटी के बराबर देखभाल करती थी।

त्योहारों के लिए कपड़े खरीदते वक्त रामशर्मा अपनी बेटी के वास्ते कीमती कपड़े खरीद लेता और अपनी भतीजी के लिए सस्ते दाम के। इसे देख रामशर्मा की पत्नी बुरा-भला कहती और दोनों लड़कियों को एक तरह के कपड़े ही खरीद लेती।

चार साल बीत गये। रामशर्मा त्योहारों के वक्त अपनी भतीजी के वास्ते सस्ते मूल्य के कपड़े भी खरीद लेते तो भी उसकी पत्नी ने आपत्ति उठाना बंद किया। वह भी धीरे धीरे अपनी बेटी को बढ़िया खाना और अपने देवर की बेटी को बचा-खुचा खिलाने लगी।

एक दिन रामशर्मा अपनी भतीजी को साथ ले अपने छोटे भाई के घर पहुँचा, बोला– "भैया, तुम्हारी भाभी पहले तुम्हारी बेटी के साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करती थी। त्योहारों के वक्त तुम्हारी भाभी का दिल जानने के ख़्याल से मैं सस्ते दाम के कपड़े खरीद लेता तो वह मुझसे झगड़कर अच्छे कपड़े खरीद लेती थी, अब तो वही खुद तुम्हारी बेटी के लिए कम क़ीमत के कपड़े खरीदने लगी है। थोड़े दिन बाद तुम्हारी बेटी के साथ वह अत्याचार भी करने लग जाएगी। इसलिए अब तुम्हारी बेटी की जिम्मेदारी तुम्हीं पर होगी।"

अफ़वाह

श्यामापुर के चारों तरफ़ कई गाँव बसे थे। वह गाँव एक प्रकार से केन्द्र स्थान में था। इसलिए काशी में वैद्य विद्या पूरा करके रवीन्द्र कुमार ने वहाँ पर अपना पेशा शुरू किया।

एक दिन गाँव के कुछ लोग एक ऐसे लड़के को डाक्टर के पास ले आये जो पेड़ पर से गिर गया था। उस लड़के को बड़ी चोट लगी थी। इस वजह से बहुत सारा खून निकल गया था। डाक्टर रवीन्द्रकुमार ने उसे बचाने की हर तरह से कोशिश की, मगर उसे बचा न पाये।

इस घटना के चार दिन बाद एक वृद्ध लकवे का शिकार हो गया। उसे उसके रिश्तेदार डाक्टर के पास उठा ले आये। डाक्टर ने कई दवाएँ दीं, फिर भी कोई फ़ायदा न रहा। दो दिन बाद वह बूढ़ा मर गया।

ऐसी ही घटना एक और युवक के साथ हो गई। रवीन्द्रकुमार ने जब से उस गाँव में अपना पेशा शुरू किया, उसके एक महीने के अंदर उसके यहाँ पर इलाज़ के लिए आये हुए तीन रोगी मर गये। इस पर गाँव वालों ने यह अफ़वाह फैलाई कि रवीन्द्रकुमार के हाथ की दवा वैकुंठ की यात्रा का टिकट कटाती है।

डाक्टर रवीन्द्रकुमार ने सोचा कि अब उसके यहाँ कोई बीमार व्यक्ति इलाज़ कराने न आयेगा, उसने दूसरे गाँव में जाने की तैयारियाँ कीं। उन्हीं दिनों में डाक्टर के पड़ोस में निवास करने वाली शांता को अचानक असहनीय पेट-दर्द शुरू हुआ।

शांता के पति गुरुनाथ का डाक्टर के इलाज़ पर कोई विश्वास न था, इसलिए उसने गाँव के किसी दूसरे वैद्य से इलाज कराया, लेकिन कोई नतीजा न निकला।

इस पर शांता ने कराहते हुए कहा–"मैं इस पीड़ा को सहन नहीं कर सकती। कम से कम डाक्टर रवीन्द्रकुमार को तो बुलवा लीजिए। न मालूम किसके हाथ की कैसी करामात है?"

उसकी पीड़ा देख गुरुनाथ घबरा गया और उसने सोचा कि शहर में जाकर किसी नामी डाक्टर को बुला लावे! मगर उसकी औरत ने रवीन्द्रकुमार को बुला लाने पर जोर दिया, तब लाचार होकर गुरुनाथ डाक्टर रवीन्द्रकुमार को बुला लाया। डाक्टर ने कोई टिकियाँ दीं, आश्चर्य की बात थी कि कुछ ही मिनटों में शांता का पेट दर्द ऐसे गायब हो गया, मानो उस पर कोई मंत्र फूंक दिया हो।

इस घटना के दूसरे दिन पटवारी का पुत्र शंभुनाथ हठात् चलते-चलते नीचे गिर पड़ा और हाथ-पैर मारने लगा। देहाती वैद्यों ने कई प्रकार से इलाज किया, लेकिन कोई फ़ायदा न हुआ,, तब शंभुनाथ के जोर देने पर पटवारी ने डाक्टर रवीन्द्रकुमार को बुला भेजा।

रवीन्द्रकुमार ने शंभुनाथ को टिकियाँ खिलाईं और उसके हाथ-पैरों पर किसी तेल का मर्दन कराया। इसके बाद घंटे-दो घंटे के अन्दर शंभुनाथ का हाथ-पैर मारना बंद हो गया। तीसरे दिन तक वह बिलकुल चंगा हो गया।

इस पर पटवारी बड़ा खुश हुआ और उसने डाक्टर रवीन्द्रकुमार के घर एक

बोरा चावल भिजवा दिया, साथ ही कुछ रुपये भी दिये ।

इस तरह रवीन्द्रकुमार के इलाज पर गाँव वालों का विश्वास जम गया । एक सफ़ल वैद्य के रूप में उसके इलाज को सबने स्वीकार भी कर लिया ।

इसके बाद क्रमशः डाक्टर रवीन्द्रकुमार के यहाँ कई रोगी इलाज कराने आने लगे । रवीन्द्रकुमार उन सबका उचित रूप में इलाज करके उन्हें स्वस्थ बनाने लगा । फिर क्या था, कुछ ही दिनों में वह उस गाँव में ही नहीं, बल्कि अड़ोस-पड़ोस के गाँवों में भी एक मशहूर डाक्टर के रूप में लोकप्रिय हो गया ।

डाक्टर रवीन्द्रकुमार के इलाज के प्रति जो अफ़वाह गाँव में फैलाई गई थी, उसे दूर करने के लिए गुरुनाथ की पत्नी शांता तथा पटवारी के पुत्र शंभुनाथ ने जो नाटक रचा था, उसे उन दोनों के सिवा कोई जानता न था । पहले जो तीन लोग डाक्टर रवीन्द्रकुमार के पास इलाज कराने आये, वे क़रीब मरने की हालत में थे, इस बात को जाने बिना गाँव के अंध विश्वासियों ने यह अफ़वाह फैला रखी थी कि डाक्टर रवीन्द्रकुमार इलाज करने में कच्चा है ।

शांता शंभुनाथ की चचेरी बहन थी । उन दोनों ने बचपन में अपने एक रिश्तेदार के यहाँ 'कंठ पकड़' का अभ्यास किया था । कंठ पकड़ का मतलब कंठ में डालने वाली चीजों को देर तक गले में रखकर इसके बाद बाहर निकालना ।

इस विद्या का प्रयोग करके शांता ने कपट पेट दर्द का अभिनय किया और देहाती वैद्यों की टिकियाँ निगले बिन मुँह के अन्दर ही रख ली थी ।

शंभुनाथ ने भी इसी तरह का प्रयोग किया और वह हाथ-पैर मारता रहा ।

इस प्रकार अंध विश्वासों के विरोधी शंभुनाथ ने शांता की मदद से अपने गाँव को देहाती वैद्यों के जाल से बचाया और वैद्य-शास्त्र के एक कुशल युवक डाक्टर को गाँव से निकलते रोक लिया ।

सच्चा भक्त

एक गाँव में जोगींदर नामक एक जादूगर था। वह साल में पांच-छे महीने देहातों में जाता, चौपाल के पास खड़े हो ऊँचे स्वर में चमत्कारपूर्ण बातें कहता। इस पर गाँव के लड़के व जवान उसके चारों तरफ़ जमा हो जाते।

जोगींदर ने अपने गुरु से जो जो विद्याएँ सीख लीं, हर जगह उन सारी विद्याओं का प्रदर्शन करता। तरह-तरह के पेंतरे बदल कर गेंद व तलवारें चलाता। सबसे आखिर प्रेक्षकों से जो कुछ मिलता, खुशी से लेकर जला जाता।

सभी लोग एक स्वर में यह मान लेते थे कि जोगीन्दर से बढ़कर जादूगरी विद्या में दूसरा कोई नहीं है। मगर उसकी कमाई दोनों जून खाने के लिए भी काफी न थी। वह बड़ी ही गरीबी की हालत में अपने दिन बिताता था।

जोगींदर यही सोचा करता—"अगर मेरी ज़िंदगी आगे भी ऐसे ही गुजरेगी तो मैं इस बात की चिंता नहीं करता कि दुनिया में मुझे सुख नहीं मिला है। मेरे मरने के बाद देवी के अनुग्रह से परलोक में ही सही सुख मिले, वही मेरे लिए पर्याप्त है!"

जोगींदार के गाँव में देवी का एक मंदिर था। आसपास के सभी गाँवों के लोगों का यह विश्वास था कि वह देवी बड़ी महिमाएँ रखती हैं! नवरात्रि के दिनों में कई गाँवों के लोग उस मंदिर में आते, बड़े वैभव के साथ उत्सव मनाकर बहुत सारा धन खर्च करते थे।

साल भर देहातों में घूमकर जोगींदर अपने जादू का प्रदर्शन करता, जो कुछ मिलता उसी से अपना गुजारा करता। पर नवरात्रि के दिनों में वह जरूर अपने

गाँव पहुँच जाता। यही उसका नियम था। यों शनै शनै जोगींदर बड़ा होता गया। जादूगरी के प्रदर्शन करने में उसकी ताक़त तो न घटी, मगर उसकी आमदनी घटती गई। क्योंकि अड़ोस-पड़ोस के सभी गाँवों के लोग सैकड़ों बार जोगींदर का जादू देख चुके थे। उन्हें जोगींदर के जादू में कोई नयापन नज़र न आता था। पहले से ही जोगींदर गरीब था, पर उम्र के बढ़ने के साथ उसकी गरीबी भी बढ़ती गई।

शारीरिक सुख के घटने के साथ जोगींदर के मन में परलोक के सुख की इच्छा और विश्वास बढ़ते गये।

एक बार नवरात्रि के उत्सव आ पड़े। ऐसा लगा कि गाँव के सभी लोग नवरात्रि के उत्सवों के कार्यों में डूबे हुए हैं। दावत और भोज के लिए तरकारी व धान गाड़ियों में लादकर लाये जा रहे थे। मंदिर के चारों तरफ़ पण्डाल बनाये जा रहे थे, तोरण बांधे जा रहे थे।

उन सब को देख जोगींदर एकदम तन्मय हो उठा। वह अपने मन में सोचने लगा—"ये सब पुण्यात्मा हैं! देवी का ज़रूर इन पर अनुग्रह होगा। अब ब्राह्मणों के पुण्य की बात कहने की ज़रूरत नहीं! वे तो मंत्र पढ़ते हैं, पूजाएँ करते हैं। अपार पुण्य कमाते हैं।"

इस बीच उसके मन में यह चिंता भी होने लगी—"इस उत्सव के समय बर्तन बनाने वाले, गाजे-बाजे बजाने वाले,
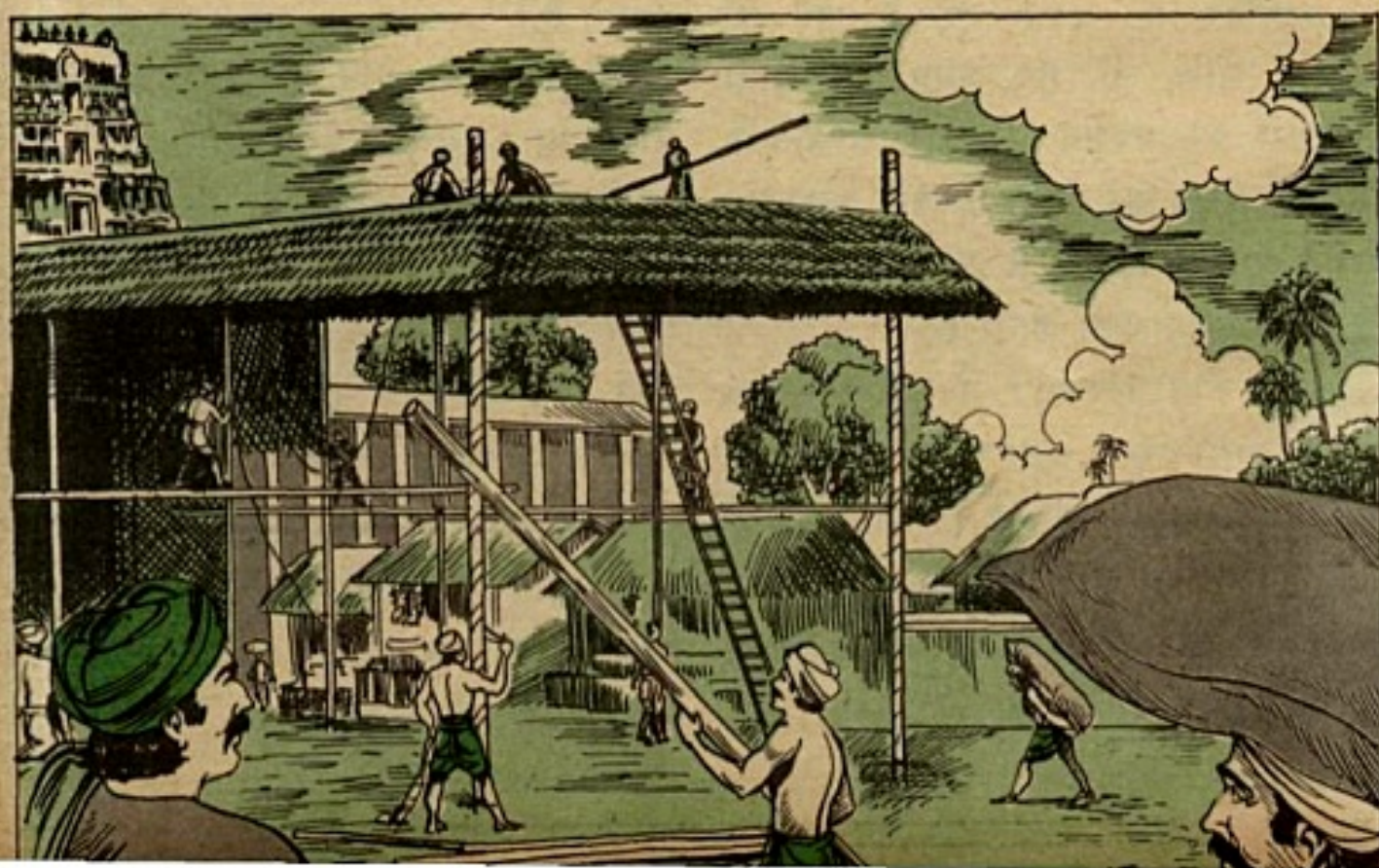
पुराणकथा वाचक, भजन करनेवाले, आखिर यहाँ तक कि दावत के लिए रसोई बनाने वाले भी यथा शक्ति देवी की सेवा करके किसी न किसी रूप में पुण्य का संपादन करते हैं, पर मैं कुछ भी नहीं कर सकता। उस देवी के लिए मैं कुछ भी नहीं कर सका।" यों विचार कर जोगीन्दर ने गहरी साँस ली।

देवी के नवरात्रि-उत्सव शुरू हुए। इधर नौ दिनों से देवी का मंदिर भूलोक के वैकुंठ जैसा लगने लगा। उस दृश्य को देखने पर जोगींदर के मन में खुशी के साथ गहरी चिंता भी होने लगी—"इतने सारे लोगों ने देवी की सेवा की, पर मैंने क्या किया?" नौवें दिन उसके मन में कोई उपाय सूझा। इस पर उसकी सारी चिंता दूर हो गई। रात को पूजा के खतम होते ही सब लोग चले गये। पुजारी इस ख्याल से मंदिर के भीतर चला गया कि कहीं प्रसाद बच गया है तो ले लें, लेकिन उसे वहाँ पर एक अनोखा दृश्य दिखाई पड़ा। उसे देख वह चकित रह गया।

कुंकुम और फूलों के बीच देवी की मूर्ति जो डूब गई थी, उसके सामने जोगीन्दर पैंतरे बदलते गेंद और तलवारें चला रहा है।

पुजारी उसी वक़्त मंदिर के न्यासधारी के घर दौड़ आया, उसे जगाकर बोला—"महाशय, आप खुद पहुँच कर देख तो लें कि मंदिर में जोगींदर क्या कर रहा है?"

"क्या कर रहा है?" न्यासधारी ने कातर स्वर में पूछा।

"ओह, यह कैसा अनर्थ है! वह देवी के सामने जादू कर रहा है। सचमुच उसका दिमाग खराब हो गया है।" पुजारी ने कहा।

"तुम अभी जाकर शास्त्रीजी और अवधानीजी को बुला लाओ।" यों कहकर न्यासधारी सीधे मंदिर में पहुँचा।

वह बिना आहट किये मंदिर के द्वार पर पहुँचा, अध खुले दर्वाजे के सुराख में से भीतर देखा। उसका शरीर एकदम रोमांचित हो उठा।

मंदिर के अन्दर जोगीन्दर इस तरह लेटा हुआ है, मानो सो रहा हो। देवी उसके सर को अपनी गोद में लिये एक हाथ से पंखा झल रही हैं और दूसरे हाथ में अपनी साड़ी के आंचल लिये जोगीन्दर के माथे पर का पसीना पोंछ रही हैं। मूर्ति की जगह देवी की मूर्ति नहीं है।

उसी क्षण न्यासधारी दर्वाजे के पास साष्टांग दण्डवत करते उच्च स्वर में देवीजी की स्तुति करने लगा।

इतने में थोड़े और ब्राह्मणों को साथ ले पुजारी वहाँ पर आ पहुँचा। उसने न्यासधारी को उस हालत में देख पूछा—"महाशय, आप यह क्या कर रहे हैं?"

ये बातें सुन न्यासधारी खड़ा हो गया, तब सब लोग मंदिर के भीतर पहुँचे, उस वक़्त मूर्ति पहले की तरह अपनी जगह थी।

जोगीन्दर बेफ़िक्र सो रहा है। न्यासधारी ने जो दृश्य देखा था, उसे दूसरों को बताया।

पर ब्राह्मणों ने उसकी बातों पर यक़ीन नहीं किया, लेकिन कुंकुम के भीतर देवी के चरणों का चिह्न साफ़ दिखाई दे रहा था। मूर्ति पर पहनाई गई साड़ी का आंचल भीगा हुआ था। इस पर न्यासधारी बोल उठा—"हम सब झूठे भक्त हैं। यह जोगीन्दर अकेला ही देवीजी का प्यारा पुत्र है!"
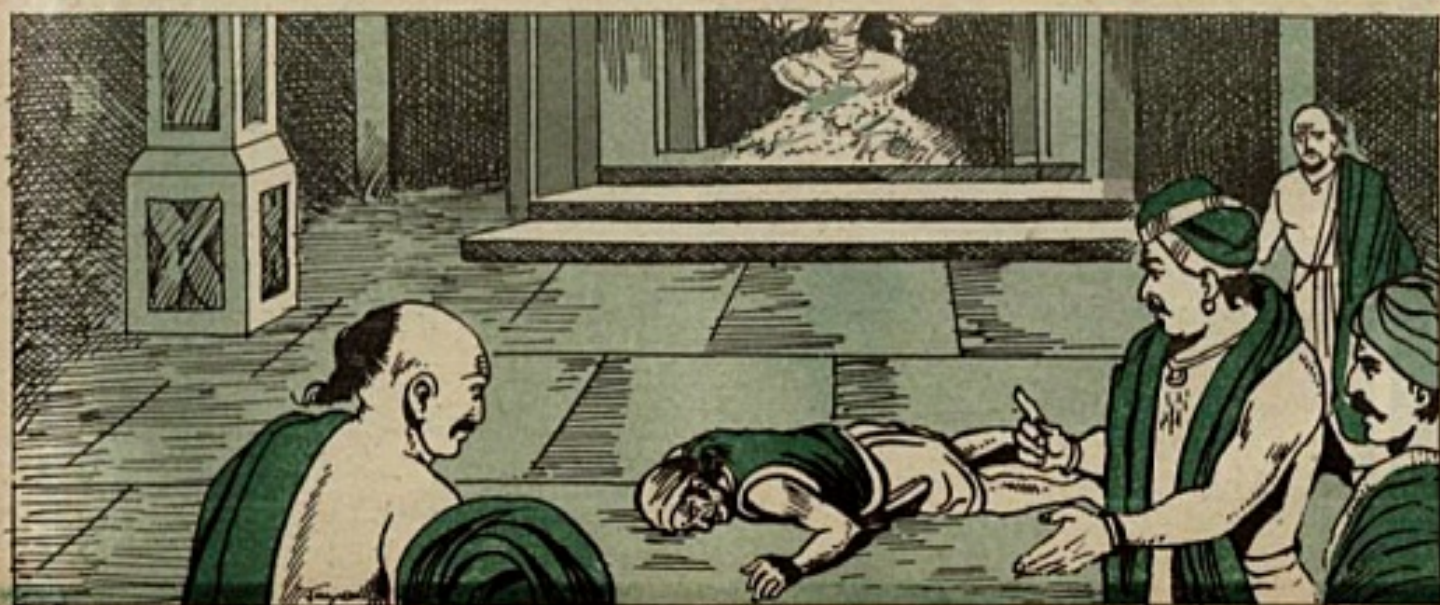
महान साध्वी

ब्रह्मदत्त जिन दिनों में काशी राज्य पर शासन करते थे, उन दिनों में बोधिसत्व काशी के समीप में स्थित एक गाँव में एक संपन्न परिवार में पैदा हुए।

बोधिसत्व ने बचपन में ही सारी विद्याएँ सीख लीं, युक्त वयस्क होने पर बोधिसत्व के माता-पिता ने काशी नगर में एक अच्छा रिश्ता तै किया और सुजाता नामक एक सुंदरी के साथ उनका विवाह किया। सुजाता न केवल सौंदर्यवती थी, बल्कि गुणवती और विवेकशीला भी थी। वह अपने सास-ससुर और पति की सेवा बड़ी श्रद्धा तथा भक्ति के साथ करने लगी।

बोधिसत्व भी सुजता के प्रति बड़ा ही अनुराग रखते थे। एक दिन सुजाता ने अपने पति से पूछा—"मेरे माता-पिता बूढ़े हो चुके हैं। उन्हें देखने की मेरे मन में बड़ी लालसा हो रही है। अगर आप भी मेरे साथ चले तो हम दोनों उन्हें देखकर लौट सकते हैं।"

सुजाता की यह इच्छा जानकर बोधिसत्व बड़े ही खुश हुए और बोले—"अच्छी बात है, हम दोनों ज़रूर उन्हें देख आयेंगे। मेरे भी मन में कई दिनों से सास और ससुर को देखने की बड़ी इच्छा है। लेकिन घर पर ज्यादा काम-काज होने की वजह से मैं चुप रह गया, वर्ना मैं ही पहले काशी जाने की तैयारी करता।"

इसके बाद दूसरे ही दिन यात्रा के लिए सारी तैयारियाँ कीं और ज़रूरी चीज़ें गाड़ी पर लादकर घर से चल पड़े। सुजाता गाड़ी पर सवार हुई और बोधिसत्व गाड़ी हांकने लगे। जब वे काशी नगर की सीमा पर पहुँचे, तब एक पेड़ के नीचे बैलों को खोल दिये। वहाँ के तालाब में हाथ-पैर धोकर खाना खा लिया। थोड़ी

देर आराम करने के बाद फिर गाड़ी में बैल जोतकर नगर की ओर चल पड़े।

बोधिसत्व की गाड़ी जब नगर में पहुँचने को थी, ठीक उसी वक़्त काशी के राजा हाथी के हौदे पर सवार हो नगर में जुलूस पर निकले थे। उस जुलूस को देखने के ख्याल से सुजाता ने अपने पति से अनुमति ली, गाड़ी से उतरकर पैदल चलने लगी। बोधिसत्व गाड़ी में पीछे चल रहे थे।

हौदे पर बैठे काशी राजा ने अत्यंत रूपवती सुजाता को देखा। उनके मन में सुजाता के साथ शादी करने की इच्छा जगी। राजा ने जब उस नारी के बारे में दर्याफ़्त किया, तब उन्हें पता चला कि वह अमुक गृहस्थ की पुत्री है और गाड़ी पर सवार व्यक्ति ही उसका पति है। राजा ने अपने मन में यह विचार किया कि किसी उपाय से सुजाता के पति का वध कराकर उसको अपनी रानी बना ले। इसके वास्ते राजा ने एक योजना बनाई।

इस निर्णय के बाद राजा ने अपने एक विश्वासपात्र सेवक को बुलाकर उसके हाथ अपना मुकुट दे दिया और आज्ञा दी– "तुम सब लोगों की आँखें बचाकर इस मुकुट को उस गाड़ी में डाल आओ।"

सेवक ने बोधिसत्व की आँखें बचाकर मुकुट को गाड़ी में डाल दिया और यह समाचार राजा को सुनाया। एक घड़ी के अन्दर लोगों के बीच यह हलचल मच गई कि राजा के मुकुट को किसी ने चुराया है।"
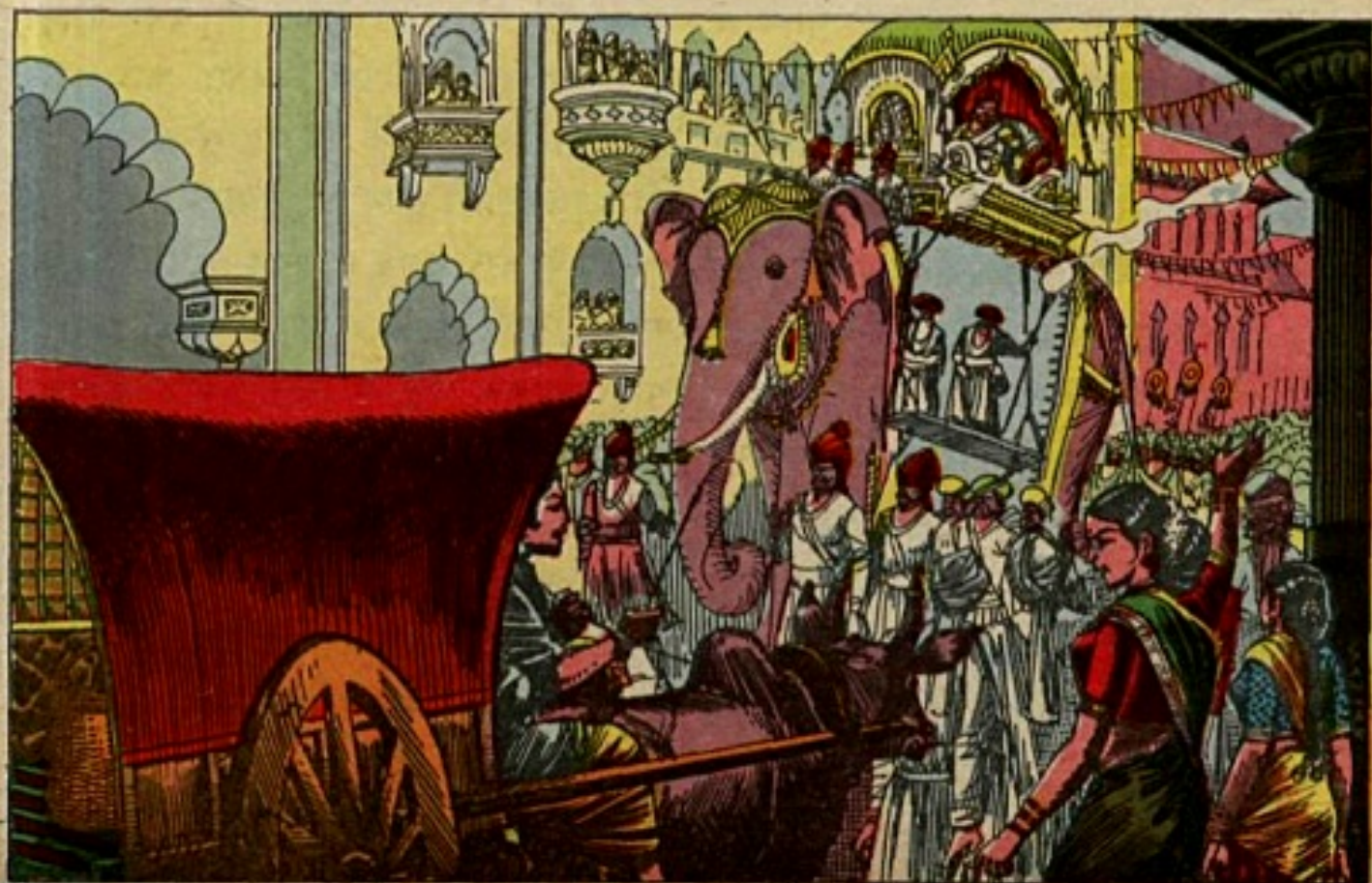
राजा ने अपने सेवकों को आदेश दिया कि मुकुट को चुराने वाले चोर को पकड़ लावे। आख़िर खोज-ढूंढ़ने पर एक सेवक को बोधिसत्व की गाड़ी में मुकुट दिखाई दिया। सेवक बोधिसत्व को चोर ठहरा कर खींच ले गया और उसको राजा के सामने हाज़िर किया।

राजा ने क्रुद्ध होकर आदेश दिया– "क्या इसीने मेरा मुकुट चुराया है? इस दुष्ट को ले जाकर इसका सर काट डालो।"

यों अपनी योजना को सफल होते देख राजा खुश हुए। उधर राज सेवकों ने बोधिसत्व को कोड़ों से पीटते राजपथों पर घुमाकर उनका अपमान किया और अंत में उनका सर काटने के लिए वद्य स्थान पर ले गये।

यह ख़बर मालूम होने पर रोते हुए सुजाता अपने पति के पीछे चल पड़ी। वह विलाप करने लगी– "मैंने ही आप को इस विपदा में डाल दिया है।" इसके बाद वह भी वद्य स्थान पर पहुँची, दुख के मारे आक्रोश करने लगी– "क्या भोले-भाले और निरपराधियों को बचाने वाले भगवान नहीं हैं? दुष्टों के अत्याचारों का क्या कोई अंत नहीं है?" महान साध्वी सुजाता का विलाप सुनकर स्वर्ग में इन्द्र का सिंहासन डोल उठा।

इन्द्र आश्चर्य में आ गये। वे सोचने लगे– "आख़िर इसकी वजह क्या है?"

इसके बाद उन्होंने अपनी दिव्य दृष्टि से सारी बातें जान लीं। जो अन्याय होने वाला था, वह उनको तुरंत मालूम हो गया।

इस पर इन्द्र ने एक विचित्र स्थिति पैदा की, उन्होंने अपनी महिमा के द्वारा राजा और बोधिसत्व के स्थान इस प्रकार बदल दिये, जिससे राजा के स्थान पर बोधिसत्व और बोधिसत्व की जगह राजा पहुँच जाय!

लोगों को यह अद्भुत मालूम न था। इसलिए उन्होंने सोचा कि हाथी के हौदे पर बैठा हुआ व्यक्ति राजा है। मगर वास्तव में वहाँ पर राजा की पोशाकों में बोधिसत्व बैठे हुए थे। इसी तरह बधिकों के अधीन में बलिवेदी पर बोधिसत्व के वस्त्रों में राजा खड़ा हुआ था।

इस रहस्य को बधिक जानते न थे! इसलिए राजा के आदेशानुसार अपने अधीन में रहने वाले व्यक्ति का सर बधिकों ने काट डाला। मरने के बाद दुष्ट काशी राजा को उनका निज रूप प्राप्त हुआ। प्रजा को मालूम हो गया कि मारा गया व्यक्ति काशी का राजा है।

दूसरे ही क्षण जनता में कोलाहल मच गया, वे यह सोचकर आश्चर्य में आ गये कि इस अनोखी घटना के कारणभूत कौन हैं?

उस समय इन्द्र ने बोधिसत्व तथा जनता को दर्शन देकर सारा वृत्तांत सुनाया और कहा—"आज से बोधिसत्व ही तुम लोगों का राजा है और सुजाता पटरानी है।" इसके बाद इन्द्र अदृश्य हो गये।

राज्य की सारी जनता यह सोचकर खुश हुई कि दुष्ट राजा के पापों का घड़ा भर गया था, इसलिए वह बलिवेदी की आहुति बन गया है। इस पर इन्द्र के आदेशानुसार प्रजा ने बोधिसत्व को अपने राजा तथा सुजाता को अपनी रानी के रूप में स्वीकार किया।

उस दिन से काशी राज्य में धर्माचरण होने लगा, समय पर वर्षा होने लगी। इस कारण सारा देश संपन्न और सुखी बन गया।

दो नगरों का पतन

राजा प्रसेनजित के शासनकाल में कोसल देश एक शक्तिशाली राज्य था। उसकी राजधानी श्रावस्ती नगरी थी। प्रसेनजित को एक भेदिये के द्वारा यह ख़बर मिली कि शाक्यवंशी लोग अपने को राजा प्रसेनजित से उच्च वंश के लोग मानते हैं। इस बात का वे गर्व करते हैं।

प्रसेनजित को इस बात का बड़ा दुख हुआ कि उन्हीं के सामंत शाक्य राजा उनके प्रति ऐसी हल्की भावना रखते हैं। इस पर वे शाक्य राजधानी कपिलवस्तु नगर में पहुँचे। शाक्य वंशियों ने राजा प्रसेनजित का भव्य स्वागत किया, पर राजा प्रसेनजित ने अपने ओहदे को बढ़ाने के ख़्याल से शाक्य राजकुमारी के साथ विवाह करने की अपनी इच्छा प्रकट की।
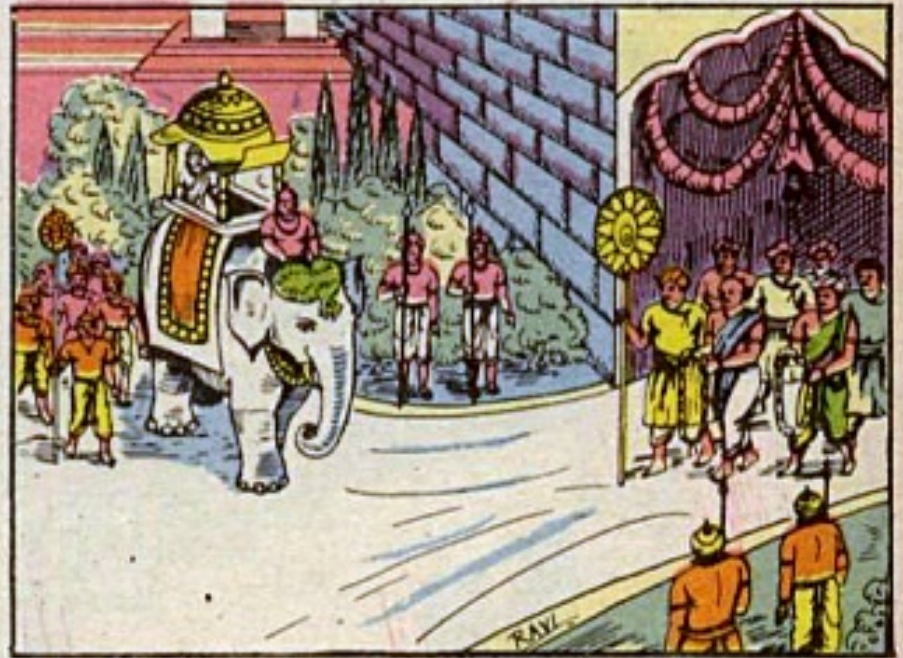
शाक्य वंशी बड़ी मुसीबत में फंस गये। उन लोगों ने भांप लिया कि शक्तिशाली प्रसेनजित की इच्छा का तिरस्कार करना ख़तरे से खाली नहीं है। इस पर उन लोगों ने गुप्त रूप से मंत्रणा की और एक कन्या के साथ राजा प्रसेनजित का विवाह किया।

इसके बाद राजा प्रसेनजित श्रावस्ती को लौट आये। उस दिन रात को राजा पुरस्कार में प्राप्त वस्तुओं को देख रहे थे, तब उन्हें उन वस्तुओं के भीतर एक चिट्ठी मिली। वह चिट्ठी वधू से ईर्ष्या करने वाली एक शाक्य युवती ने लिखी थी। उस चिट्ठी के द्वारा मालूम हुआ कि प्रसेनजित ने जिस कन्या के साथ शादी की, वह एक शाक्य वीर की दासी की पुत्री है।

यह समाचार मिलते ही राजा प्रसेनजित क्रोध में आकर राजमहल की ऊपरी मंजिल पर पहुँचे और सैनिकों को चेतावनी देने वाली घंटी बजाई। दूसरे ही क्षण हज़ारों सैनिक दौड़े-दौड़े आ पहुँचे और राजा का आदेश पाने के लिए राजमहल के अहाते में हाज़िर हो गये।

कपिलवस्तु पर हमला करने के पहले अपनी वधू को एक बार देखने के विचार से राजा प्रसेनजित अपने महल में गये। पर उस भोली-भाली कन्या को रोते देख राजा का मन बदल गया। तुरंत राजा ने सैनिकों को लौट जाने का आदेश दिया और उस वधू को अपनी पट्ट महिषी घोषित किया।

कुछ साल बीत गये। इस बीच रानी ने एक पुत्र को जन्म दिया। उस बालक का नाम विरोधक रखा गया। बड़े होने पर उसने क्षत्रियोचित सारी विद्याएँ सीख लीं। एक बार वह अपने नाना को देखने कपिलवस्तु पहुँचा। लेकिन भोजन के समय कोई भी शाक्य उसकी पंक्ति में न बैठा, इस पर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ।

शाक्यों का इस विचित्र व्यवहार उसकी समझ में न आया। इसलिए श्रावस्ती को लौटते ही उसने अपनी माता के दर्शन करके इसका कारण पूछा। विरोधक की माता ने सच्ची हालत बताई। इस पर विरोधक क्रोधावेश में आ गया।

विरोधक ने अपने पिता से पूछा—"शाक्यों ने आपके साथ जो धोखा दिया, उसे सहनकर आप चुप कैसे रह गये?" राजा प्रसेनजित ने सोचा कि अपनी वृद्धावस्था के समय उन्हीं का पुत्र उनके विरुद्ध विद्रोह करने जा रहा है। इसलिए वे अपनी पुत्री, जो मगध की रानी थी, के पास पहुँचे। इसी चिंता के मारे बीमार होकर मर गये। इस पर विरोधक राजा बन बैठा।

राजगद्दी पर बैठते ही विरोधक ने कपिलवस्तु पर हमला करना चाहा, पर सेनापतियों ने उसे समझाया कि यह उचित अवसर नहीं है। मंत्रियों ने भी सुझाया कि जिन शाक्यों ने विरोधक का अपमान किया है, उनमें से एक भी ज़िंदा नहीं है। फिर भी विरोधक ने कपिलवस्तु पर आक्रमण किया।
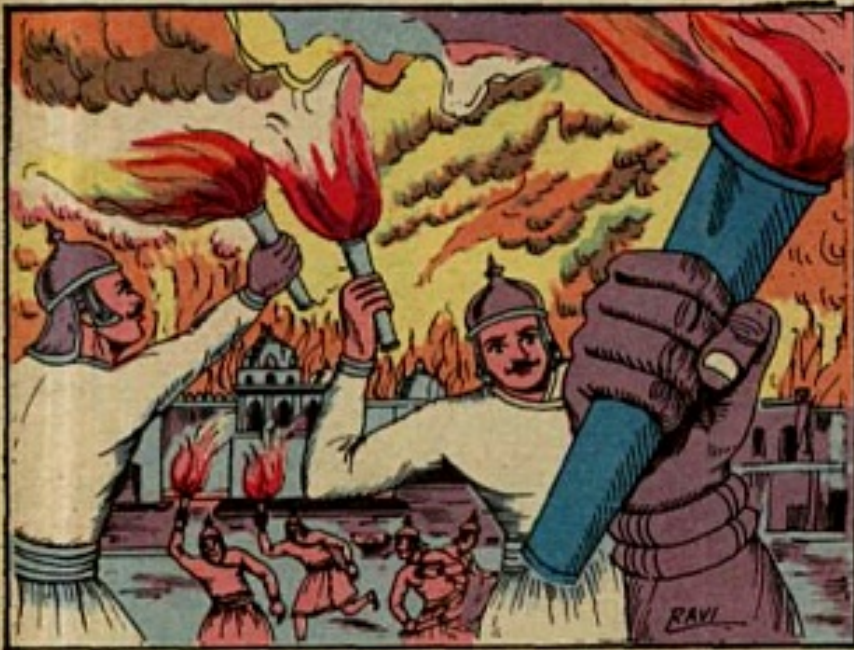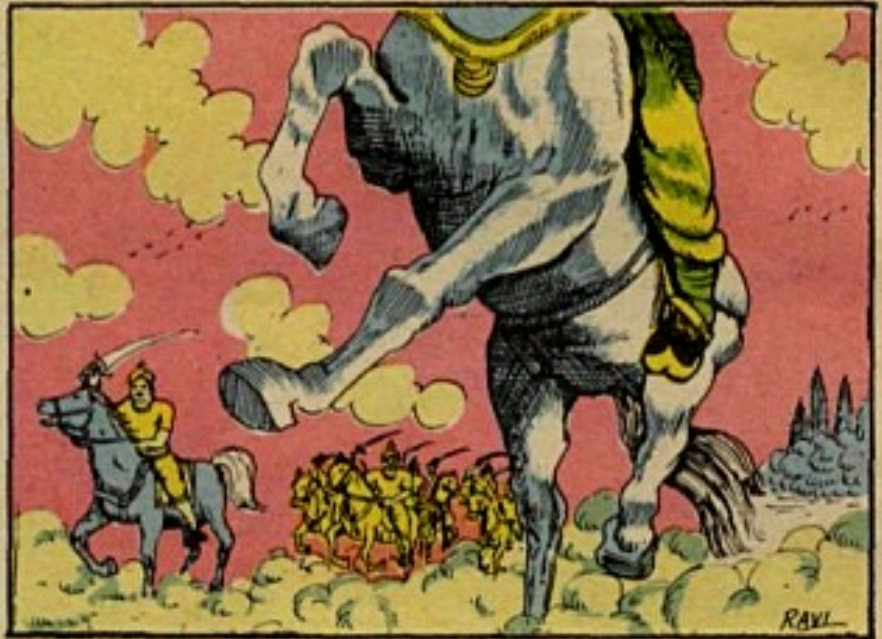
शाक्य वंशी युद्ध के लिए तैयार न थे, इसलिए वे लोग विरोधक की सेनाओं का सामना न कर पाये। विरोधक ने कपिलवस्तु के राजमहलों की अमूल्य वस्तुओं को लूटा और उन्हें अग्नि की आहुति कर डाली। उस युद्ध में असंख्य शाक्य वंशी मारे गये। राजधानी नगर को ध्वस्त किया गया। इसके बाद विरोधक श्रावस्ती के लिए लौट पड़ा।

पर विरोधक ने श्रावस्ती को लौटकर देखा कि राजमहल मटियामेट किया गया है। बात यह थी कि मगध राजा ने यह सोचकर श्रावस्ती पर हमला किया कि विरोधक ने राजा प्रसेनजित को बुढ़ापे में कष्ट पहुँचाया है, इसलिए अपने मामा के प्रति हुए इस अन्याय का बदला लेने के ख़याल से श्रावस्ती पर अधिकार करके उसे मगध राज्य में मिला लिया।

नौकरी की क़ीमत

रंगनाथ के माँ-बाप उसके बचपन में ही मर गये थे। उसके रामनाथ नामक एक छोटा भाई था। रंगनाथ ने उसे बड़े ही लाड़-प्यार में पाला-पोसा और बड़ी मेहनत करके उसे पढ़ाया-लिखाया। रंगनाथ को जल्द ही कचहरी में अच्छी नौकरी लग गई। उस वक़्त तक रामनाथ की पढ़ाई पूरी नहीं हुई। कचहरी के एक-दूसरे कर्मचारी ने अपनी कन्या के साथ रंगनाथ की शादी की।

इसके एक-दो साल बाद रामनाथ की पढ़ाई पूरी हो गई। इस पर रंगनाथ ने अपने परिचितों की सिफ़ारिश से छोटे भाई रामनाथ को भी नौकरी दिलाई, मगर तीसरे ही दिन रामनाथ उस नौकरी को तिलांजलि देकर घर लौट आया।

रंगनाथ ने आश्चर्य में आकर पूछा— "रामनाथ, तुमने वह नौकरी क्यों छोड़ दी? क्या तुम्हारे मालिक ने तुम्हें कुछ बुरा-भला कह दिया है?"

रामनाथ खीझकर बोला— "मेरे मालिक थोड़ा भी शिष्टाचार नहीं जानते! मुझे नौकरी एक चीज़ की दी और मुझसे दूसरे प्रकार के काम लेते हैं। इसलिए मैं वह नौकरी बिलकुल नहीं करना चाहता।"

रंगनाथ चुप रह गया। कुछ दिन बाद अपने छोटे भाई के लिए एक जगह दूसरी नौकरी दिलाई। रामनाथ ने तीसरे ही दिन उस नौकरी को भी छोड़ दिया।

रंगनाथ अपने छोटे भाई पर बिगड़ पड़ा, इस पर रामनाथ बोला— "मेरे अधिकारी हर छोटी सी बात पर मुझे धमकी दे रहे थे कि तुमको नौकरी से हटा दूंगा। मैंने उनसे कहा कि आप को मुझे नौकरी से हटाने का मौक़ा क्यों दूं? मैं ही खुद इस्तीफ़ा देता हूँ, यों कहकर मैंने ही इस्तीफ़ा दे दिया है।"

प्रमीला ठाकुर

चार दिन बीत गये। पांचवें दिन रामनाथ ने अपने भाई से कहा–"भैया, मैं यह नौकरी बिलकुल नही कर सकता। मेरे अधिकारी तो मेरे साथ ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे किसी बच्चे के साथ किया जाता है! मेरे ऊपर के अधिकारियों को मेरा काम बिलकुल संतोषजनक नहीं है।"

इस पर रंगनाथ ने अपने क्रोध को निगलते हुए पूछा–"तब तो क्या तुम नौकरी छोड़कर चले आये हो?"

"अभी तक नहीं छोड़ी। आप ने नौकरी छोड़ने के पहले सारी तक़लीफ़ें आपको बताने को कहा था न?" रामनाथ ने जवाब दिया।

"यह तो बताओ कि आखिर तुम करना क्या चाहते हो?" रंगनाथ ने पूछा।

"मैं अफ़सरों के दुत्कार सुनते अपने स्वाभिमान को बेचना नहीं चाहता।" रामनाथ ने साफ़ कह दिया।

"तब तो तुम्हारे मन में जो आये, सो करो।" यों कहकर रंगनाथ वहाँ से चले गये। इस घटना के चौथे दिन रंगनाथ उदास भरे चेहरा लिये घर पहुँचा।

"क्या बात है? आप दुखी क्यों हैं!" रंगनाथ के छोटे भाई और पत्नी ने पूछा।

"मेरी नौकरी छूट गई है।" रंगनाथ ने जवाब दिया।

"हर नौकरी के पीछे तुम यों अंट-संट कारण बताकर नौकरी को इस्तीफ़ा देते जाओगे तो मैं तुम्हारे वास्ते नौकरियाँ कहाँ ढूंढ सकता हूँ? इस बार तुम्हें तक़लीफ़ें भी हुई तो नौकरी को छोड़कर मत आना। मुझे बताओ, मैं तुम्हारी समस्या को हल कर दूंगा।" यों रंगनाथ ने उसे चेतावनी दी।

रामनाथ ने सारी बातें चुपचाप सुन लीं एक सप्ताह बीत गया। एक दिन रंगनाथ अपने छोटे भाई को साथ ले कचहरी पहुँचा। रंगनाथ ने रामनाथ को एक नौकरी दिलाई, उसे सारी बातें सिखाई, समझा-बुझाकर घर लौट आया।

"ऐसा क्यों? आप क़ई सालों से यह नौकरी कर रहे हैं न?" रामनाथ ने अचरज में आकर पूछा।

"इसीलिए तो मुझे सबसे ज़्यादा दुख हो गहा है। कोई दूसरी नौकरी भी करना चाहूँ तो मिलने की गुंजाइश नहीं है।" रंगनाथ ने जवाब दिया।

धीरे-धीरे उस परिवार में आर्थिक कठिनाइयाँ शुरू हुईं। दिन गुजारना मुश्किल मालूम होने लगा। खाने-पीने की चिंता उन पर सवार हो गई। रामनाथ आज तक कभी फाका न रहा।

ये बातें सोचकर रामनाथ दुखी होने लगा कि उसने बहुत सारी नौकरियाँ जान-बूझ कर छोड़ दी हैं। अगर कम से कम उसकी भी नौकरी होती तो परिवार का यह बुरा हाल न होता। अब यह नौकरी करना भी चाहे तो देनेवाला महानुभाव कोई नहीं है! आज तक अपने भाई का सहारा पाकर ही उसने नौकरियों के प्रति लापरवाही दिखाई है। अब मजदूरी करके ही सही परिवार का पेट पालना होगा।

यों विचार कर रामनाथ ने अपना निर्णय अपने बड़े भाई को सुनाया। अपने छोटे भाई में यह परिवर्तन देख बड़ा भाई खुश हुआ और बोला—"भैया, कचहरी में जाकर पहले तुम इस बात का पता तो लगाओ कि तुम जिस नौकरी को छोड़ आये हो, वह अभी तक खाली है या नहीं?" रामनाथ ने आँखों में आँसू भरकर कहा—
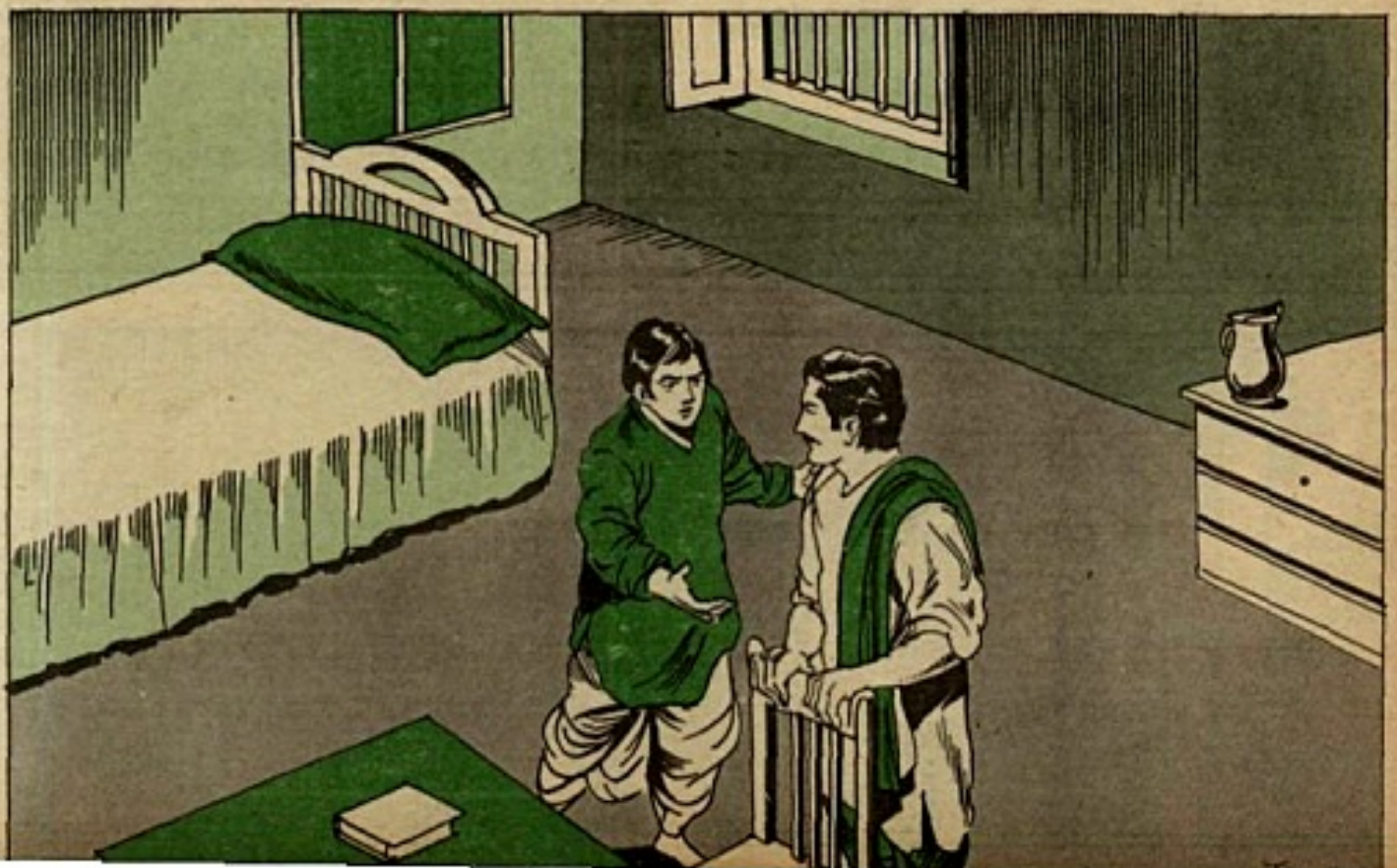
"उस दिन में अपने बड़े अधिकारियों के साथ लड़-झगड़ कर अपनी नौकरी छोड़ आया हूँ। ऐसी हालत में क्या वे लोग मेरे वास्ते आज तक थोड़े ही खाली छोड़ कर रखे होंगे? किसी भाग्यवान को उन लोगों ने वह नौकरी दे दी होगी।"

"फिर भी पता लगाना अच्छा है न?" यों समझा कर रंगनाथ ने अपने छोटे भाई रामनाथ को कचहरी में भेजा।

वह नौकरी सचमुच अभी तक खाली पड़ी थी। बड़े अधिकारी पहले रामनाथ पर बिगड़ पड़े, मगर रामनाथ जब उसके पैरों पर गिरकर गिड़गिड़ाने लगा, तब उसको फिर से वह नौकरी सौंपने के लिए अधिकारी मान गये। इस पर रामनाथ को अपनी जिंदगी में पहली बार नौकरी की क़ीमत मालूम हुई। उसने घर लौट कर बड़ी खुशी के साथ नौकरी के मिलने की बात अपने बड़े भाई को बताई।

दूसरे दिन बड़े भाई जब कचहरी जाने लगे तब रामनाथ ने आश्चर्य में आकर पूछा—"भैया, क्या आप को भी फिर से नौकरी मिल गई है?"

रंगनाथ ने हंसकर जवाब दिया—"मेरे प्यारे भाई, दर असल मेरी नौकरी छूटी नहीं। मेरे मन में अपनी नौकरी के प्रति आदर के साथ निष्ठा भी है! ऐसी हालत में कोई मुझे नौकरी से क्यों हटायेंगे? तुम्हारे मन में तुम्हारी नौकरी के प्रति लापरवाही और घृणा का भाव था। इसीलिए तुम हर नौकरी के प्रति कोई ऐब या बहाना बनाकर उसे छोड़ते गये! कल तक हमारे घर में जो बुरा हाल छाया गया था, उसे मैंने ही जान-बूझ कर पैदा किया था। मैंने तुम्हारे ऊपर के अधिकारी को पहले ही सारी हालत बता कर यह इंतजाम कर रखा था कि तुम्हारी नौकरी को किसी दूसरे को मत सौंपे।"

इस पर रामनाथ ने आज तक जो मूर्खतापूर्ण व्यवहार किया था, उस पर खुद लज्जित हुआ; और अपनी करनी के लिए अपने बड़े भाई से माफ़ी मांग ली।

ईमानदारी

अवंती राज्य का मंत्री अमरपाल सचाई व ईमानदारी के लिए बहुत ही मशहूर था। एक दिन पड़ोसी राज्य में निवास करने वाला उसका भानजा भूपाल अपने मामा के घर आया और बातचीत के सिलसिले में पूछा–" मामाजी, आपके अवंती राज्य के सैनिकों की संख्या कितनी होगी ?"

यह वास्तव में गुप्त बात थी, इसलिए अमरपाल ने तत्काल जवाब न दिया, पल भर बाद सोचकर कहा–" भूपाल, ऐसी ख़ास गुप्त बात बतानी हो तो तुम्हें पहले इस बात की क़सम खानी होगी कि तुमने मुझसे जो कुछ सुना, उसे कहीं प्रकट न करोगे !"

भूपाल यह सोचकर गुस्से में आया कि उसके मामा उसकी ईमानदारी पर शंका कर रहे हैं, तब शपथ खाकर बोला–" मामाजी, मैं वेद और शास्त्रों का अध्ययन करके, यज्ञ-याग आदि करने वाले पवित्र वंश में पैदा हुआ हूँ। ऐसी हालत में अपना वचन भंग करके उस रहस्य को प्रकट करूँ तो मेरी दुर्गति होगी और मैं इह और परलोक-कहीं का न रह जाऊंगा।"

इस पर अमरपाल ने झट कहा–" क़सम खाने की बात उठाते ही तुमने अपने पिता के वंश के बड़प्पन और अपनी ईमानदारी का ज़िक्र किया। यह बात तो बड़ी अच्छी है ! लेकिन मैंने भी राजा के रहस्य जानने के पहले अपनी ईमानदारी पर शंका न करने की बिनती करके इसी प्रकार की क़सम खा ली है।" इस पर भूपाल ने अपनी भूल समझ ली।

क्रोधी पति

लक्ष्मी की बेटी और दामाद जब अपने घर के लिए निकलने को थे, तब उसने एक बार और अपने दामाद को याद दिलाया–"बेटा, तुम्हारे रास्ते में बालाजी का मंदिर पड़ता है! उस भगवान के दर्शन करना न भूलो।"

अपने पति के मरने के बाद लक्ष्मी देहात में ही रहकर खेतीबाड़ी की देखभाल किया करती थी। वसंता उसकी इकलौती बेटी थी। शहर में नौकरी पर लगे वीरेश के साथ चार दिन पहले ही वसंता की शादी हो गई थी। लक्ष्मी ने शादी के पहले ही यह मनौती की थी कि वर-वधू को वह भगवान के दर्शन के लिए जरूर भेज देगी।

वीरेश और वसंता जब बालाजी के मन्दिर में पहुँचे, तब तक अंधेरा फैल चुका था। उन्हें बड़ी मुश्किल से सराय में ठहरने की जगह मिल गई। वीरेश ने गुस्से में आकर अपनी पत्नी से कहा–"बूढ़ी सास से चुप बैठा रहा नहीं गया। उसने मनौती की। अगर हमें सराय में ठहरने को जगह न मिलती तो हमारी क्या हालत हो जाती? हम कल्पना भी नहीं कर सकते।"

अपने पति के मुँह से ये बातें सुन वसंता चकित रह गई। अपनी माँ के प्रति इस प्रकार अपमानजनक बातें सुनने पर वसंता को बड़ा दुख हुआ। नींद के लगने तक वीरेश अपनी सास को गालियाँ सुनाता ही रहा। वसंता एक बार कुछ कहने को हुई तो वीरेश ने खीझकर कहा–"तुम अपना मुँह बंद करके चुपचाप सो जाओ।"

दूसरे दिन भगवान के दर्शन के लिए जाने के पहले वीरेश ने नाश्ता मंगवा लिया। वसंता ने समझाया–"भगवान के दर्शन के बाद नाश्ता करेंगे।"

रमेशचन्द्र यादव

"तुम बकवास मत करो। मैं जो कहता हूँ, सो करो। यही तुम्हारा फ़र्ज है, समझी!" यों वीरेश ने वसंता को फिर डांट दिया।

वसंता ने आँखों में आँसू भरकर अनिच्छापूर्वक नाश्ता किया। उसी क्षण उसे मालूम हुआ कि उसका पति क्रोधी स्वभाव का है।

दोनों भगवान के दर्शन करके सराय में लौट आये। वसंता अपने सामान को ठीक-ठाक करके बोली-"भगवान की मूर्ति सजीव मालूम होती है न?"

"मैंने पहले ही बताया कि आइंदा तुम मेरे सामने बक-झक मत किया करो। मेरी आज्ञा का पालन करना और चुपचाप पड़े रहना यही बस तुम्हारा काम है।" वीरेश ने गरजकर कहा।

वसंता का दिल कचोट उठा। वे दोनों उस दिन शाम तक शहर में पहुँचे। वसंता को अपनी यह नई गृहस्थी नरक जैसे मालूम हुई। उसे घर की सारी चाकरी करनी है, पति के लिए हर चीज का इंतज़ाम करना है, फिर भी मुँह नहीं खोलना है। यों पंद्रह दिन बीत गये।

एक दिन शाम को किसीने दर्वाजे पर दस्तक दी, वसंता ने जाकर किवाड़ खोला। देखती क्या है, द्वार पर कोई पचास साल का बूढ़ा खड़ा हुआ है।

वसंता सकुचाते हुए देखती रह गई। इतने में बूढ़ा बोला-"मैं रिश्ते में तुम्हारा छोटा मामा लगता हूँ! चलो!" ये बातें कहकर बूढ़ा घर के अंदर आया और बोला-"उस कुर्सी पर बैठ जाओ, कोई बात नहीं।"

वसंता के कुर्सी पर बैठने पर बूढ़े ने पूछा-"तुम्हारी सास और ससुर इस समय कहाँ पर हैं?"

वसंता आश्चर्य में आकर बोली-"वे तो दस साल पहले ही गुजर गये हैं न?"

"हाँ, हाँ! भूल ही गया! मुझे यक़ीन ही नहीं होता कि वे गुजर गये हैं! वे दोनों अपने नाम के अनुरूप सीता और राम

"तुम अपनी बकवास बंदकर अंदर चली जाओ! मेरा भी मुँह है, मैं पूछकर सारी बातें जान सकता हूँ!" वीरेश वसंता पर टूट पड़ा।

फिर क्या था, वसंता चुपचाप घर के अन्दर चली गई।

"क्यों रे वीरेश! तुम्हें मेरी याद है?" यों बूढ़े ने प्यार से वीरेश का परामर्श किया।

वीरेश को तो बूढ़े की पहचान न हुई, फिर भी उसने वीरेश के माता-पिता और चाचा-भतीजों का सारा परिचय दिया। इस पर वीरेश को लगा कि यह बूढ़ा कोई उनका रिश्तेदार ही होगा।

जैसे थे।" बूढ़े ने अपनी शाल से आँख पोंछते हुए कहा।

"अजी, उनके नाम तो पार्वती और शिवराम हैं न!" वसंता शंका करते हुए बोली।

"हाँ, हाँ! उसी भगवान के नाम हैं! हाँ; यह बताओ, इस वक़्त शिवराम के छोटे भाई कहाँ हैं?" यों पूछकर उसने उनके नाम-धाम का पता लगाया। वसंता ने शंका करते हुए सारे विवरण बता दिये।

शाम को वीरेश घर लौटा।

"ये महाशय आपके दूर के रिश्तेदार होते हैं!" इन शब्दों के साथ वसंता कुछ और कहने को हुई।

वीरेश ने घर के अन्दर जाकर वसंता से पूछा—"तुमने मेरे चचाजी की कुछ खातिरदारी की या नहीं? जानती हो, तुम्हारे ससुर और उनके छोटे भाइयों पर ये जान देते हैं?"

वसंता ने बताना चाहा कि उन सबके नाम उसीने बूढ़े को बताये हैं; मगर वीरेश ने उसे मौक़ा नहीं दिया, उल्टे डांट कर बोला—"तुम बकना बंद करके जल्दी रसोई का काम देख लो।"

इसके बाद बूढ़ा और वीरेश बातचीत में खो गये। वसंता ने रसोई बनाकर दोनों को खिलाया। फिर उन दोनों के वास्ते बीच के कमरे में खाट लगवा कर वह

रसोई घर में चटाई बिछा करके लेट गई। सवेरा होने को था। अपने पति की चिल्लाहट सुनकर वसंता जाग उठी। उसी वक़्त वह अपने पति के कमरे में पहुँची। बूढ़े का बिस्तर खाली पड़ा था। बगल में रखा हुआ संदूक़ खुला पड़ा था। कपड़े सारे कमरे में तितर-बितर फैले हुए थे।

"वह बूढ़ा जो है, पक्का चोर है। रात को हमें फुसलाकर घर में घुस आया और सारी तनख़्वाह उड़ा ले गया।" वीरेश ने व्याकुल होकर कहा।

वसंता के मन में पहले से ही शक था। उसने यह समाचार सुनाकर कहा–"उस बूढ़े ने आपके परिवार के बारे में सारी बातें मुझसे ही जान लीं। उन सबको अपने ही भाई-बन्धु बताकर आपको खूब चकमा दिया।"

"तब तो तुमने मुझे पहले ये सारी बातें क्यों नहीं बताईं?" वीरेश ने गुस्से में आकर पूछा।

"आप तो हर बात पर बिना कारण आपे से बाहर हो जाते हैं! आप ने कभी क्या मुझसे कुछ सुनने की तकलीफ़ उठाई? आपके इस अंधे क्रोध का परिणाम ही यह सारा अनर्थ है!" वसंता ने हिम्मत करके कहा। अब जाकर वीरेश को अपनी भूल मालूम हुई। अपना क्रोध ही अपने लिए शाप बन जाता है। उसने अपने मन में सोचा–"रुपये चोरी हो गये, कोई बात नहीं, मगर इस अनुभव के जरिये उसकी आँखें तो खुल गईं।"

उस दिन से अपने पति के अन्दर यह परिवर्तन देख वसंता बड़ी खुश हुई। इसके चार दिन बाद एक लड़का वीरेश के घर पहुँचा और उसके हाथ थैली थमाते हुए बोला–"किसी बूढ़े ने आपको यह थैली देने को कहा है। इतना भर कहकर वह लड़का उसी वक़्त चला गया।

वीरेश ने थैली खोलकर देखा, तब वह आश्चर्य में आ गया। उसके अंदर रुपयों के साथ एक चिट्ठी भी थी।

चिट्ठी में लिखा था–"बेटा, वीरेश! तुम पति-पत्नी दोनों ने मुझे चोर मानकर मन ही मन गालियाँ दी होंगी! पर मैं यह विश्वास करता हूँ कि इस अनुभव के द्वारा तुम्हारे भीतर परिवर्तन आया होगा। क्रोधी पति के साथ निभाना किसी भी पत्नी के लिए नामुमकिन है! मैं भी एक क्रोधी प्रकृति का था। मेरी पत्नी को मुंह तक खोलने का मौक़ा दिये बिना, बिना वजह के हर बात पर उस पर खीझता और उसे डांटता-डपटता था। मेरे सारे दिन ऐसे ही बीत गये। लेकिन मेरी पत्नी बड़ी नरम दिल की थी। इसलिए मेरे क्रोध को सहनकर उसने मेरे साथ गृहस्थी निभाई। हमारी यह जिंदगी बिलकुल छोटी है। इसलिए क्रोध के द्वारा उसे दुखमय बनाना नहीं चाहिए। मेरी पत्नी के मर जाने पर मेरी दुर्गति शुरू हुई और मेरे लिए बुरे दिन आ गये। मेरे क्रोध से डरकर मेरे दोनों बेटों और बहुओं ने मुझे अपने घर आश्रय नहीं दिया। मैं उस दिन रात को मंदिर की सराय में तुम लोगों के बाजू के कमरे में ठहरा था। मैंने तुम दोनों की सारी बातचीत सुन ली। अगर तुम सचमुच बदल गये हो तो तुरंत वसंता को लेकर मेरे घर आ जाओ! मैं अपने बेटों से दूर हूँ, ऐसे व्यक्ति के लिए तुम मेरे बेटे के बराबर बने रहो! मेरा पता यों है–"

चिट्ठी पढ़कर वीरेश उत्साह से भर उठा और अपनी पत्नी को पुकारते बोला–"वसंता, तुम जल्दी तैयार हो जाओ।"

इस पर वसंता सर हिलाकर मौन रह गई। पर वीरेश से रहा नहीं गया। वह जल्दी मचाते हुए बोला–"वसंता, तुम्हारे मुंह खोलते ही तुम्हारा मुंह बंद कराने की मेरी बुरी आदत कभी की छूट गई है! तुम इस वक़्त मुझसे यह मत पूछो कि हम कहाँ जा रहे हैं! हम अब तुम्हारे ससुर के घर जा रहे हैं, चलो, देरी मत करो! जल्दी चलो!!"

समय की सूझ

वज्रगिरि के राज्य में एक डाकू रहा करता था। उसके यहाँ जगन और किशन नामक दो प्रमुख शिष्य रहा करते थे। बूढ़ापे में मरते वक़्त डाकू ने अपने दोनों प्रिय शिष्यों को बुलाकर समझाया– "बेटे, तुम दोनों मिलकर अपना पेशा करते हुए आराम से जिओ। इस तरह मेरा नाम भी दो-चार पीढ़ियों तक रोशन करो।"

अपने गुरु के मरने के बाद भी कुछ दिन तक जगन और किशन मिल-जुलकर रहें, लेकिन इसके बाद बंटवारे को लेकर दोनों में झगड़े शुरू हुए और दोनों अलग-अलग रहने लगे।

दोनों में से किशन बड़ा होशियार था, वह कभी राज भटों के हाथों में न आया। जगन कई बार चोरी करते पकड़ा गया। और उसने कारागार की सजा भी भोगी।

एक दिन क़ैद से छूटते ही जगन ने किशन से मिलकर पूछा–"भाई, तुम कई दिनों से चोरियाँ करते हुए भी राजभटों के हाथों में नहीं पड़े। ऐसी होशियारी के साथ तुम चोरियाँ करते हो! आखिर इसका रहस्य क्या है? हम दोनों एक ही नामी डाकू के शिष्य जो ठहरें! सच्ची बात तो यह है कि गुरुजी के पास मेरे पहुँचने के तीन-चार साल बाद तुम आये!"

ये बातें सुन किशन हंसकर बोला– "इसमें कोई बड़ी रहस्य की बात नहीं है! बस, यह तो समय की सूझ है!"

"समय की सूझ का मतलब क्या है? जरा साफ़-साफ़ समझ में आने लायक़ बतला दो।" जगन ने पूछा।

"हम दोनों ने गुरुजी की सेवा करते उनसे सारी विद्याएँ समान रूप से सीख ली हैं! तुम ये सारी विद्याएँ सीखकर भी

शीला भार्गव

असफल क्यों रहे? जानते हो, तुम्हारे भीतर समय की सूझ की कमी है! इसलिए सुनो। कल रात को मैं एक किसान के घर चोरी करने गया। अंधेरे में किसी चीज़ से ठोकर खाकर बड़ी आवाज़ हुई। तुरंत किसान की पत्नी ने जाग कर पूछा–"कौन है वह?" मैंने झट "म्याव! म्याव!" करके बिल्ली जैसा बर्ताव किया। उसके पति की नींद खराब हो गई। इस पर वह अपनी औरत को डांट कर बोला–"क्या तुम्हें मालूम नहीं होता? बिल्ली चिल्ला रही है! अब सो जाओ।" फिर क्या था, दोनों सो गये। मौक़ा पाकर सारी चीजें हड़प करके मैं उस घर से भाग आया।" किशन ने समझाया।

"ओह, समय की सूझ का मतलब यह है। मुझे आश्चर्य होता है कि ऐसी छोटी बात पर मैं आज तक सोच भी नहीं पाया। मैं फिर फ़ुरसत से आकर तुमसे मिलूंगा।" यों कहकर जगन वहां से चल पड़ा।

उसी दिन रात को जगन किसी के घर में सेंध लगाकर भीतर घुस गया। वहाँ कुछ ढूंढ ही रहा था कि कहाँ पर क़ीमती चीजें हैं कि नहीं? इस बीच उसका पैर एक टीन के डब्बे से लग गया और जोर की आवाज़ हुई।

तुरंत घर की मालकिन ने अपने पति को जगाते हुए पूछा–"कौन है वह?"

जगन अपनी ही जगह छिपकर बैठते हुए बोल उठा–"मैं बिल्ली हूँ!"

दूसरे ही क्षण पति-पत्नी चिल्ला उठे–"चोर! चोर! पकड़ लो।"

किशन ने जो युक्ति बताई थी, वह कैसे असफल हो गई, जगन की समझ में न आया। वह बचने के ख्याल से सेंध से निकलकर गली के अंदर आ गया। लेकिन तब तक उस घर वालों की चिल्लाहटें सुन कर अड़ोस-पड़ोस के लोग अपने घरो से बाहर निकल आये। गली में भागने वाले जगन को पकड़कर सिपाहियों के हाथ सौंप दिया।

"विघ्नेश्वर, अभी आपने गजासुर का संहार किया। इसकी यादगारी के रूप में गणपति नवरात्रि के उत्सव चिरकाल तक वैभव के साथ मनाये जायेंगे। भविष्य में जनता की स्वेच्छा, काल तथा कल्याणकारी जो भी कार्यक्रम चलाये जायेंगे वे सब गणेशजी के उत्सवों के साथ सफलता पूर्वक संपन्न होंगे।" यों आकाश-वाणी सुनाई दी। इस पर विष्णु ने विघ्नेश्वर से कहा—"हे पार्वती नंदन! तुम मेरे भानजे हो, इस कारण तुमने मुझ पर एक और उत्तरदायित्व का भार डाल दिया।"

इसके उत्तर में विघ्नेश्वर ने कहा—"मामा का रिश्ता जोड़कर कालनेमी बने कंस का आप तो संहार करने वाले हैं न? ऐसी विद्याएँ तो आपने ही सिखाई हैं?"

"हे विघ्न विनाशक! तुम्हारे परसु के सामने मेरा चक्रायुध किस खेत की मूली है? तुम्हारी कुल्हाड़ी का कौशल देखने पर मुझे अपार आनंद हुआ।"

विघ्नेश्वर बोले—"आप परशुराम के अवतार में मेरी कुल्हाड़ी को उधार में लेकर घमण्डी क्षत्रियों के सर काट डालेंगे।"

"विघ्नेश्वर, तुम जब गज विघ्नासुर पर सवार हो उसका मर्दन कर रहे थे, तब तुम्हारे लड़खड़ाते क़दमों वाला वामन रूप देख मुझे बड़ी खुशी हुई।" विष्णु ने कहा।

"तब तो आप भी वामन रूपधारी बन कर बलिचक्रवर्ती को पाताल तक अपने चरण से धंसायेंगे!" विघ्नेश्वर ने कहा।

"हे विघ्नराजा! मैं आप का दास हूँ! आप की आज्ञा का पालन करने वाला हूँ। मुझे आज्ञा दीजिए!" यों कहकर विघ्नेश्वर की अनुमति ले कालिंदी तड़ाग में पहुँचा और कालीय के रूप में छिप गया।

विघ्न के पीछे मूषिकासुर चूहे के रूप में पहुँचा। छद्म वेष में छिपकर विघ्न की बुरी हालत देख दांत मींच लिया, तब अपने निज रूप में विघ्नेश्वर के सामने खड़े हो सिंहनाद कर उठा।

विघ्नेश्वर ने मूषिकासुर की बलिष्ठ देह को संतुष्टिपूर्वक देखा। मूषिकासुर लापरवाही से अट्टहास करके बोला—"विघ्न तो आप का गुलाम है। इसलिए चाहे उसके साथ जैसा भी आपने व्यवहार किया हो, वह मान जाएगा। पर मैं आप का जन्मजात शत्रु हूँ! आपने सिंह स्वप्न की बात सुनी होगी। मैं सिंह बनकर आपके कुंभस्थल को चीर डालूँगा।" यों कहकर वह सिंह रूप धरकर गरज उठा।

इस पर विघ्नेश्वर बोले—"हे सिंह, तुम जगज्जननी के वाहन हो। इसलिए मैं तुम्हारा आदर करता हूँ।"

सिंह भागने को हुआ, तब विघ्नेश्वर ने शिवजी का स्मरण किया—"हे शिव! हे शरभ!" इस पर सिंह के सामने शिवजी का शरभ अवतार घींकार करते प्रत्यक्ष हुआ।

"तुम्हारी बुद्धि का वर्णन किन शब्दों में करूँ?" विष्णु के मुँह से ये शब्द सुनकर विघ्नेश्वर बोले—"आपके अवतारों का मूल कारण धर्म की स्थापना है; उसका वास्तविक अर्थ है—जब समाज हिंसा तथा अंध विश्वासों के द्वारा सड़ जाता है, उस समय आप बुद्ध बनकर मानव जाति को सही सामाजिक जीवन तथा निर्वाण का उपदेश देंगे। मायादेवी के स्वप्न में मेरे सफ़ेद हाथी का रूप उनके गर्भ में प्रवेश करके बुद्ध बने आप सिद्धार्थ के अवतार का श्री गणेश करेंगे!" विघ्नेश्वर ने कहा।

इस पर विष्णु परमानंदित हुए। इसके बाद परमाणु के रूप में स्थित विघ्न बोला—

शरभ का शरीर सिंह के रूप में था, उसके अयाल थे, दाढ़े भी थे, पर उसमें हाथी के दांत व सूंड़ भी थी। महा सर्प जैसी पूंछ के छोर पर आग की लपटें उगलने वाला मगर-मच्छ का मुंह था। शरभ ने सिंह के मुंह पर अपनी सूंड का ऐसा प्रहार किया कि उसका चेहरा सूझ गया। इस पर सिंह अपनी पूंछ दबाकर भाग गया, तब शरभावतार अदृश्य हुआ।

विघ्नेश्वर ने अपनी सूंड़ बढ़ाकर सिंह की कमर में लपेट ऊपर उठाया, उस वक़्त आकाश में जाने वाले नारद हिंदोल राग का गान करने लगे।

इस पर सारे देवता एकत्रित हो यह विचित्र दृश्य देखने लगे। उसी समय विष्णु ने प्रत्यक्ष होकर कहा–"हे विजयी विघ्नेश्र! तुमने जिस सिंह को पकड़ लिया है, उसे मैं पालना चाहता हूँ। मुझे दोगे?"

विघ्नेश्वर हंसकर बोले–"ओह, उसे पालने का बहाना बनाकर उसके सिर और नाखून निकाल करके नरसिंह का अवतार धरकर हिरण्यकश्यप का पेट फाड़ना चाहते हैं? इस मृगराज की ज़रूरत मुझे भी है। आप को अपने नरसिंह अवतार की बात खुद सोच लेनी होगी!"

इसके बाद सूंड़ मूषिकासुर सिंह को महाश्वेता के सामने छोड़ अदृश्य हो गई। महाश्वेता का पति नाराज़ हो उठा। इस पर महाश्वेता ने अपने पति को अनेक प्रकार से समझाया, फिर भी उसने नहीं माना, अपने निज रूप में जाकर विघ्नेश्वर का सामना करने को दौड़ पड़ा। इस पर महाश्वेता ने देवी की प्रार्थना की। देवी ने दर्शन देकर समझाया–"तुम्हारा पति विघ्नेश्वर के चूहे के वाहन के रूप में चिरंजीवी बना रहेगा! तुम भी श्वेत छत्र बनकर तुम्हारे पति के साथ चिरकाल तक विघ्नेश्वर की सेवा करती रहोगी।" यों कहकर देवी अंतर्धान हो गई।

वज्रदंत कामरूपी था। इसलिए वह गण्ड भेरुण्ड पक्षी का रूप धरकर रास्ते में

सकता हूँ! कैलाश को मटियामेट कर सकता हूँ!"

विनायक चारों ओर दृष्टि दौड़ाकर बोले—"हाँ, हाँ, जो दांत किसी काम के नहीं, उनके होने से फ़ायदा ही क्या है?" यों कहकर उन्होंने अपने एक दांत को चट से आधा तोड़ डाला और उसे फेंक दिया।

वह दांत हवा में चक्कर काटते अपने इंद्रजाल का प्रदर्शन करते चला गया और वज्रदंत पर बुरी तरह से प्रहार करने लगा। वज्रदंत के बदन से खून की धाराएँ छूटने लगीं। महाश्वेता इसे देख न पाई और पीड़ा के मारे बेहोश हो गई।

चलने वाले दो हाथियों को अपने नाखूनों से कसकर उड़ा ले जा रहा था। उस वक़्त जो हल-चल मची, उस पुकार को सुन एक छोटे गीध के रूप में हरि का ध्यान करने वाले गरुड़ का ध्यान भंग हुआ। इस पर गीध ने गंड भेरुण्ड पर अपनी चोंच का प्रहार किया। चोट खाकर वज्रदंत अपने निज रूप में पृथ्वी पर गिर पड़ा।

मूषिकासुर विघ्नेश्वर के पास पहुँचकर बोला—"तुम भी बड़े-बड़े दांत रखते हो! मगर क्या फ़ायदा? वे दांत सिर्फ़ कपित्थ के फल खाने में काम देते हैं! मैं अपने दाढ़ों से वज्र को भी चूर कर

वज्रदंत भी उस पीड़ा को सहन न कर पाया, वह एक छोटे से चूहे का रूप धर कर पत्थरों के बीच बिल बनाकर घुस गया। एक दंत को स्वयं तोड़कर विघ्नेश्वर उस समय से एकदंत कहलाये।

इसके बाद दंत भी बिल में घुसकर चूहे पर वार करते उसका पीछा करने लगा। चूहा सुरंग बनाते पाताल लोक में पहुँचा, वहाँ पर भी दंत उसका पीछा करता रहा। तब वह चूहा पृथ्वी पर दौड़ आया, आखिर सारी पृथ्वी की परिक्रमा करके विघ्नेश्वर की शरण में जाकर बोला—"महानुभाव, मुझे तो मौत न आएगी। आप का दंत मेरे बदन को छलनी बना रहा है! हे देव, आप

मुझे इस पीड़ा से मुक्त कीजिए।" इस पर विघ्नेश्वर ने उस पर रहम कर मूषिकासुर को अभयदान किया, तब वह दंत लौटकर विघ्नेश्वर के हाथ में शोभा देने लगा।

विघ्नेश्वर ने कहा–"हे मूषिकासुर, तुम देखने में एक छोटे से चूहे हो, पर तुम महाबली हो! महा कूर्मावतार के साथ मंदर पर्वत को तथा आदि वराहवतार के साथ पृथ्वी को उठाने वाले श्री महा विष्णु से भी तुम ज़्यादा बलवान हो। उचित वाहन के अभाव में मैं भी अपने लंबोदर को लेकर ठीक से चल नहीं पाता हूँ। इसलिए तुम जैसे..." यहाँ तक कहकर अपनी बात को समाप्त करने के लिए वे संदेह करने लगे! लेकिन मूषिकासुर विघ्नेश्वर की प्रशंसा पाकर फूले न समाया और बोला–"भगवन, आपके दंत ने मेरे भीतर के अज्ञान को दूर किया और मेरे शरीर को नोच-नोच कर मेरे अन्दर ज्ञान भर दिया। आप का वाहन बनने में तो मैं अपना भाग्य ही समझूंगा। मैं एक विशाल वाहन के रूप में भी बदल सकता हूँ।" यों कहकर मूषिकासुर एक हाथी के बराबर का चूहा बन गया। विघ्नेश्वर उसकी देह पर अपना पैर रखकर बैठने को हुए। पर वह महा मूषिक दब गया। विघ्नेश्वर मुस्कुरा कर बोले–"बेटा, मूषिक! तुम छोटे चूहे के रूप में रहोगे, तभी मुझे आसानी से ढो सकते हो! मेरी आकृति के लिए लघु चूहे का वाहन ही सब प्रकार से उचित मालूम होगा!"

मूषिकासुर लघु चूहे के रूप में बदल गया, विघ्नेश्वर को अपनी पीठ पर बिठाया, तेज गति के साथ परिक्रमा करते बोला–"भगवन, अब मुझे ऐसा लगता है कि मेरी पीठ पर कोई बोझ तक नहीं है!"

इस बीच धवला होश में आ गई। विघ्नेश्वर को प्रणाम करके बोली–"देव, मेरे पति आपके लिए लघु चहे का वाहन बनकर रह जायेंगे। मुझ पर भी ऐसा

अनुग्रह कीजिए कि मैं आपके वास्ते श्वेत छत्र बनकर चिरकाल तक रह जाऊं!"

विघ्नेश्वर प्रसन्न होकर बोले–"देवी, तुम्हारे श्वेत छत्र की शीतल छाया मेरे लिए रक्षा का कवच बन जाएगी!" फिर वे चूहे को देख बोले–"हे वज्रदंत, धवला को देवी का अनुग्रह प्राप्त है। इसलिए उसकी इच्छा अमिट है। तुम मेरा वाहन बनकर रह जाओ। मुझे जो कुछ मिलता है, उसे तुम भी मेरे साथ खा लो। तुम्हारी आँखों के सामने देवताओं से लेकर सभी प्राणी अपने सर पर ठोंग मारकर जब तीन बार उठा-बैठी करेंगे, तब उसे देख तुम बहुत ही संतुष्ट हो जाओगे।"
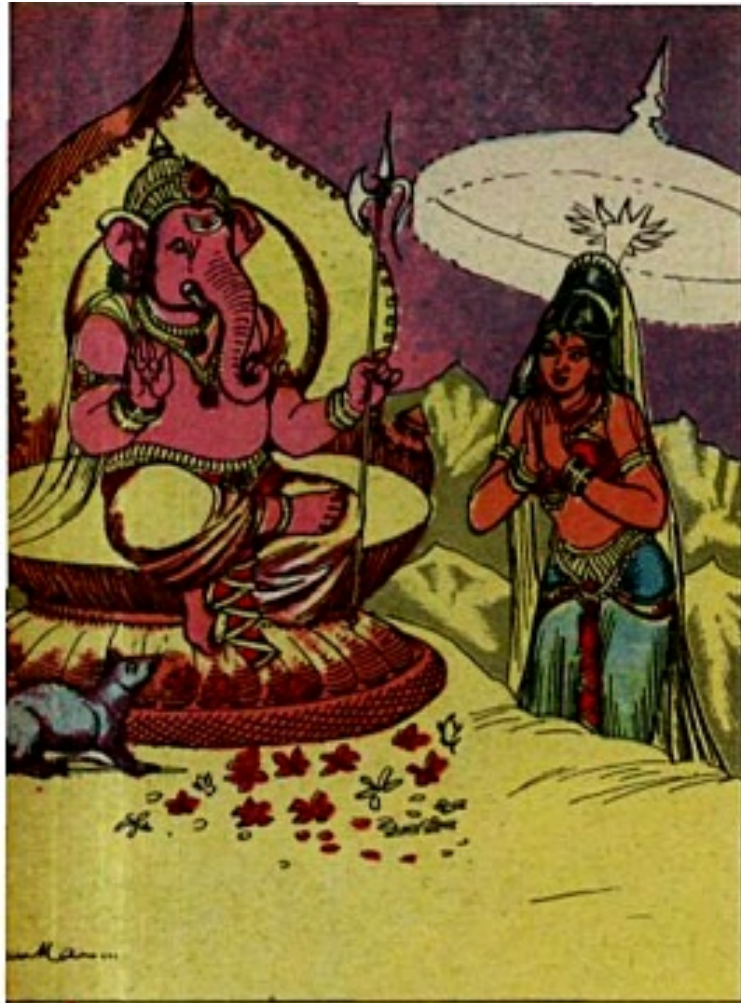
"हाँ, देव! मैं भी आपसे यही कामना करना चाहता था। मैं इसके पूर्व वज्रदंत के रूप में सभी देवताओं के द्वारा ऐसे ही अपने आगे करवाता था! अब मैं आपका वाहन बनकर कृतार्थ हो गया हूँ!" मूषिक ने कहा।

इसके बाद धवला श्वेत छत्र के रूप में विघ्नेश्वर पर अलंकृत हुई। उस दिन से विघ्नेश्वर मूषिक वाहन धारी बन गये।

विष्णु ने विघ्नेश्वर की प्रशंसा करते हुए कहा–"हे एकदंत! मूषिकोत्तमवाहन धारी! तुम्हारे वाहन को देखने पर मुझे ईर्ष्या हो रही है। वाह, तुमने कैसा बढ़िया वाहन प्राप्त किया!"

इसके जवाब में विघ्नेश्वर बोले–"आपके कल्कि के अवतार के समय मेरा वाहन आप का सफ़ेद घोड़ा बन जाएगा और अंतरिक्ष को पारकर ग्रहों के बीच आपको ले जाएगा। इस प्रकार मानवों के लिए नये उपनिवेश स्थापित करेगा।"

"वाह! तुम्हारी वाणी सफल हो!" विष्णु ने परमानंदित हो कहा।

उसी वक़्त नारद वहाँ पर पहुँच कर बोले–"विजयी विघ्नेश्वर! अब तक आप के साथ विष्णु के नौ अवतार प्रकट हुए। अब सिर्फ़ एक अवतार शेष रह गया है!"

विष्णु ने नारद को आँख का इशारा करके कहा–"जल्द ही जब विवाह की घड़ी समीप आएगी, तब तुम्हें इस अवतार का भी पता चल जाएगा! जल्दबाजी किसलिये?"

"भगवन, किसका विवाह?" नारद ने पूछा।

"हमारे कल्याण चक्रवर्ती विजयी विघ्नेश्वर का विवाह!" विष्णु बोले।

विघ्नेश्वर ने क्रोध भरी दृष्टि से देखा। अपने मन में गुनगुनाने लगे–"अब एक हज़ार विघ्न पैदा करने होंगे।"

"बेटा, बस यहीं तक बंद करो। याद रखो, एक हज़ार विघ्नों के समाप्त होते ही आगे आधा विघ्न भी पैदा नहीं करना।" विष्णु ने सचेत किया।

"एक हज़ार विघ्नों के पैदा होने में कितनी देर लगती है! एक हज़ार विघ्नों के बाद विघ्नेश्वर का विवाह निश्चित है! फिर रुकेगा नहीं!" यों कहकर स रि स रि मा ग रि का आलाप करते नारद तीनों लोकों का परिभ्रमण करने लगे।

उधर शिवजी का पार्वती के प्रति मोहानुराग तेज के रूप में बदल गया। अग्निदेव ने उसे ले जाकर शरवण सरोवर में पहुँचा दिया। इस पर छे मुखों के साथ कुमारस्वामी अवतरित हुए। छे ऋषि-पत्नियों ने उस बालक को पालकर पार्वती और परमेश्वर को सौंप दिया। कुमार स्वामी पलकर बड़े हो गये। गरुड़ ने उनको मयूर वाहन दिया। इन्द्र ने उन्हें कई आयुध दिये। पार्वती ने शक्तिवाला भाला सौंपा। कुमार स्वामी ज्यो-ज्यों बड़े होते गये, त्यों-त्यों तारकासुर डर के मारे दुस्वप्न देखने लगा।

कुमारस्वामी ने भारी तपस्या की। ब्रह्मज्ञान का बोध कराकर सुब्रह्मण्यस्वामी कहलाये। ओंकार के गुप्त रहस्यों का शिवजी को परिचय कराकर उनके गुरु बन गये। इसके बाद दोनों भाई–विघ्नेश्वर तथा कुमार स्वामी कैलास में पार्वती और परमेश्वर के घर पर बड़े ही प्रेमपूर्वक खेल-कूद और मनोरंजक गीत गाते विहार करने लगे।

[६]

दिलैला और जीनाब ने नगरवासियों को खूब धोखा दिया, आखिर खलीफ़ा ने उनका पता लगाकर उन्हें माफ़ किया। दिलैला डाक चलाने के पद पर नियुक्त हुई। इस घटना के कुछ दिन बाद कैरो नगर से "पारा" नामक एक युवक बगदाद में आ पहुँचा। उसका असली नाम अली है। वह देखने में सुंदर था, मगर पक्का डाकू था। वह कैरो नगर का निवासी है! फिलहाल कोत्वाल के पद पर नियुक्त अहमद जब कैरो में एक नामी डाकू के रूप में मशहूर था, तब "पारा" ने उसी के यहाँ चोर विद्या सीख ली थी। इसके बाद अहमद बगदाद चला आया, यहाँ पर भी डाकू के रूप में नाम कमाया, इसके बाद वह कोत्वाल बना। उन दिनों में "पारा" कैरो नगर में चोरों का सरदार बन गया था। वह कई बार पकड़ा गया, मगर बचकर भाग निकला, इस वजह से लोग उसे "पारा" कहकर पुकारने लगे।

"पारा" अली को अहमद ने ही बगदाद में बुला भेजा। दिलैला की बाबत अपमानित होने के बाद अहमद के मन में हर पल "पारा" याद आने लगा। वह अहमद के लिए दायाँ हाथ बना था। वह सोचने लगा कि अगर "पारा" अली उसके साथ होता तो उसका यह अपमान न हुआ होता।

"पारा" अली बगदाद पहुँचते ही सीधे अहमद के घर गया। उसे देखते ही अहमद की जान में जान आ गई। उसने अली को समझाया–"भैया, तुम मेरे घर पर थोड़े दिन के लिए सबकी आँख बचाकर

रह जाओ, तुम्हारे साथ एक ज़रूरा काम आ पड़ा है। इस काम के पूरा होने पर में तुम्हारी सिफ़ारिश करके तुमको कोई अच्छी नौकरी दिलाऊँगा!"

"पारा" ने अहमद के घर दो दिन बिताये। तीसरे दिन अहमद जब कचहरी में चला गया, तब 'पारा' उसके घर से चुपके से बाहर निकल पड़ा।

वह थोड़ी ही दूर गया था कि मर्द की पोशाक में एक बूढ़ी सर पर चांदी के कबूतर वाली सोने की टोपी धारण कर घोड़े पर जाते हुए उसे दिखाई दी। उसके पीछे लाल जरीदार पोशाकें धारण कर चालीस नीग्रो दिखाई दिये। दिलैला उसी दिन सवेरे कचहरी गई, डाक में भेजने के लिए ज़रूरी खबरें इकट्ठी करके अपने घर लौट रही थी। दिलैला "पारा" अली का नया चेहरा देख उसकी ख़ूबसूरती पर अचरज में आ गई। मगर उसके चेहरे पर अहमद की रूप रेखाएँ दिखाई दीं।

दर असल अहमद का चेला बनते वक़्त अली ने अनायास ही उसकी दृष्टि और मुख भंगिमाओं को अपना लिया था। दिलैला ने यह भी भांप लिया कि अली खुद अहमद के घर की तरफ़ मे चला आ रहा है।

दिलैला ने घर पहुँचते ही अपनी बेटी को अली का समाचार सुनाया और सावधान करते हुए बोली—"मुझे ऐसा लगता है कि अहमद ने इस जवान को कहीं से बुला भेजा है। वह हर गली को परखकर देख रहा था, इसलिए मेरा अनुमान है कि वह इस नगर में आज या कल आया है। हमें तो बहुत ही सावधान रहना है।"

जीनाब ने अपनी माँ के मुँह से सारी बातें ध्यान से सुनीं, थोड़ी देर सोच कर बोली—"माँ, तुमने तो बड़े-बड़े नामी चोर और डाकुओं की परवाह नहीं की, ऐसी हालत में मसें तक न भीगी उस जवान को देख डरती क्यों हो?" इसके बाद जीनाब ने बढ़िया पोशाक धारण कर आँखों में

काजल लगाया, चेहरे पर घूंघट डाले, हाथ में थैली ले गली में घुस पड़ी।

वह धीरे-धीरे चलते जब थोड़ी दूर गई, तब एक दूकान पर उसे 'पारा' दिखाई पड़ा। अपनी माता के दिये हुए हुलिए के आधार पर जीनाब ने 'पारा' को पहचान लिया, तब उस जवान को धक्का देते आगे बढ़ी, फिर पीछे घूमकर नाराज हो बोली– "अबे, आँखों के अंधे, तुम कौन हो?"

पारा ने जीनाब को देखा और उसकी खूबसूरती पर चकित रह गया। उसने मुस्कुराते हुए पूछा–"वाह, तुम कैसी खूबसूरत हो? बताओ, तुम किसकी लड़की हो?"

"मैं एक सौदागर की बेटी हूँ और एक दूसरे सौदागर की बीवी हूँ! तुम्हारा व्यवहार देखने से लगता है कि तुम इस शहर के लिए नये हो? हाँ, यह तो बताओ कि तुम रहते कहाँ हो?" जीनाब ने पूछा।

'पारा' ने अहमद की बात गुप्त रखने के ख्याल से कहा–"अभी तक मेरा बसेरा कहीं नहीं है, कहीं इंतजाम करना होगा।"

"तब तो मेरे घर चलो। हमारा मकान बहुत बड़ा है! मेरे खाविंद दूकान पर चले जाते हैं तो मुझे घर पर अकेली रहना पड़ता है।" जीनाब ने कहा।

'पारा' ने पहले संकोच किया कि उस युवती के पास जाना खैरियत नहीं है। फिर भी उसने सोचा कि इस शहर में उसे कोई नहीं जानता, यों विचारकर उसका स्वभाव जानने का निश्चय कर लिया।

इसके बाद जीनाब ने 'पारा' को कई गलियाँ घुमाया, आखिर एक बड़े मकान के सामने खड़ा करके वह चाभी के वास्ते अपनी थैली में ढूंढने लगी। वह मकान एक बड़े सौदागर का था। उस वक़्त उस मकान में कोई न था। वह सौदागर सवेरे हा घर पर ताला लगाकर दूकान पर चला जाता और रात तक नहीं लौटता। यह बात जीनाब अच्छी तरह से जानती थी।

"ओह, चाभी कहीं खो गई है। अब मैं क्या करूँ? क्या तुम ताला खोल सकते हो?" जीनाब ने पूछा।

"मैं कोशिश करता हूँ।" यों कहकर पारा ने उस बड़े ताले को पल भर में खोल दिया। जीनाब ने भांप लिया कि यह जवान एक क़ाबिल डाकू है।

इसके बाद वे दोनों मकान के अन्दर चले गये। जीनाब ने कहा–"तुम बैठक में आराम करो, मैं कुएँ से पानी खींचकर अभी रसोई बनाती हूँ।" यो कहकर वह घड़ा लेकर पिछवाड़े में चली गई।

थोड़ी देर बाद कुएँ के पास खड़ी हो जीनाब चिल्ला उठी। उसकी चिल्लाहट सुनकर पारा घबरा कर वहाँ पहुँचा। इस बीच उबहन को खिसका कर भीतर झांकते हुए जीनाब दिखाई दी।

"क्या हुआ?" पारा ने पूछा।

"मेरे हीरे की अंगूठी कुएँ में गिर गई। पांच सौ दीनार ख़र्च करके कल ही मेरे शौहर ने इस अंगूठी को ख़रीदा था। मैंने उसी वक़्त बताया था कि उँगली में यह ढीली है, कहीं फिसल कर गिर जाएगी। अब वह कुएँ में गिर रई। मेरे खाविंद को मालूम हो जाएगा तो वे मेरी जान ले लेंगे।" यों कहते जीनाब रो पड़ी।

"तुम डरो मत! मैं कुएँ में उतरकर अभी अंगूठी को निकाल लाता हूँ।" यों समझाकर पारा ने कुएं कें आड़े वाले शहतीर में रस्सा बांध दिया और उसकी मदद से कुएँ में उतर पड़ा। इसके बाद रस्से को छोड़कर पारा जब पानी में डुबकी

लगाने लगा, तब जीनाब ने रस्से को ऊपर उठा लिया और बोली–"सुनो, अब तुमको अहमद ऊपर निकाल लेगा। तब तक तुम कुएँ में ही रह जाओ।" यों कहकर उसकी पोशाकें लेकर जीनाब अपने घर चली गई।

उस दिन रात को उस मकान का मालिक सौदागर अपने नौकर के साथ घर लौटा। किवाड़ खुले देख वह अचरज में आ गया। उसने घबराकर सारे घर में घूमकर देखा कि कहीं किसी चीज़ की चोरी तो नहीं गई। मगर उसकी सारी चीज़ें ज्यों की त्यों थीं।

सौदागर के नहाने के लिए पानी खींचने के ख्याल से उसका नौकर कुएँ के पास पहुँचा और कुएँ में उबहन डालकर पानी खींचने को हुआ, मगर उसे उबहन बड़ा ही बोझीला मालूम हुआ। इस पर नौकर–"बाप रे बाप! भूत है, शैतान है!" चिल्लाते सौदागर के पास पहुँचा। सौदागर दिया लेकर पिछवाड़े में गया तो देखता क्या है, पारा उबहन पकड़कर कुएँ के भीतर से ऊपर चढ़कर चला आ रहा है।

इस पर सौदागर चिल्ला उठा–"अरे बदमाश! तुम कौन हो! अभी मैं तुमको सिपाहियों के हाथ पकड़ा देता हूँ!"

"हुजूर, यह कौन सा मुल्क है? यह कौन सा गाँव है? मैं मिश्र देश का बाशिंदा हूँ! मैं नील नदी में नहा रहा था, एक भँवर मुझे खींच ले गई। मैं खुद नहीं जानता कि कितनी गहराई तक पहुँचा, फिर जब मैं पानी पर तिर आया तो अपने को आपके कुएँ में पाया।" यों पारा ने झूठ-मूठ की कहानी गढ़कर सुनाई।

सौदागर ने उसकी बातों पर यक़ीन किया। वह समझाने के स्वर में बोला–"बेटा, तुम्हारा यह अनुभव अनोखा है। यह तो बगदाद शहर है। तुम बड़ी दूर चले आये हो! मैं तुम्हें सूखे कपड़े दे देता हूँ, पहन लो। आज रात को यहीं पर खाना खाकर सो जाओ। कल सवेरे तुम अपने शहर को जा सकते हो!" (और है)
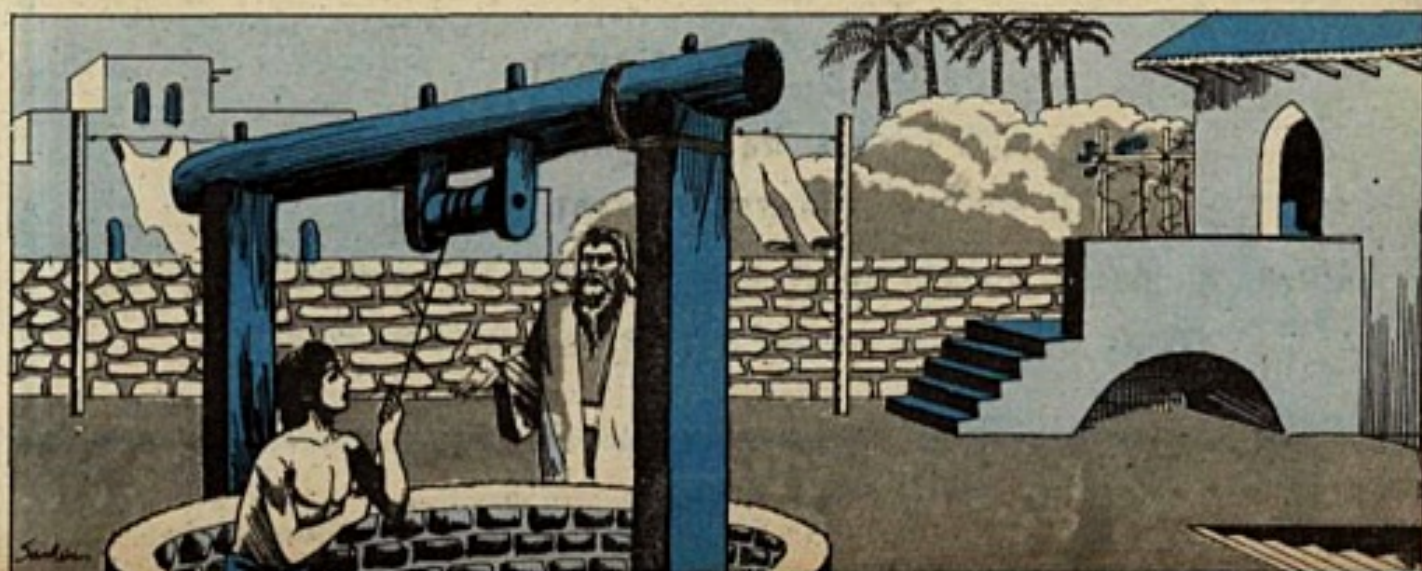
फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २५)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ सितम्बर १९८१ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

P. Sundaram

★

M. Natarajan

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों।

★ जुलाई १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए, उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा।

★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) २५ रु. का पुरस्कार दिया जाएगा।

★ दोनों परिचयोक्तियाँ कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसमें न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

मई के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो : **रंग भेद की दुनिया तोड़ो!**

द्वितीय फोटो : **छोटे-बड़े से रिश्ता जोड़ो!!**

प्रेषिका: कु. समीक्षा चन्द्राकर, सिगोरे प्लॉट, मुधोलकर पेठ, अमरावती (महाराष्ट्र)

पुरस्कार की राशि रु. २५ इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 188, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

आ रहे हैं, आप के मन बहलाने
वाल्ट डिस्नी की
अनोखी दुनिया से आप के मित्र
मिकी माउस, डोनाल्ड डक,
अंकल स्क्रूज, गूफ़ी आदि
चन्दामामा
क्लासिक्स और कामिक्स
हिन्दी में
वॉल्ट डिस्नी की
विचित्र पुरी
कॉमिक्स जगत को निराली देन
चन्दामामा पब्लिकेशन्स
मद्रास
का प्रकाशन
प्रति
रु. २-००
सिर्फ़

चन्दामामा-कैमल रंग प्रतियोगिता

निःशुल्क प्रवेश

इनाम जीतिए

कैमल–पहला इनाम १५ रु.
कैमल–दूसरा इनाम १० रु.
कैमल–तीसरा इनाम ५ रु.
कैमल–आश्वासन इनाम ५
कैमल– र्टिफिकेट १०

केवल १२ वर्ष तक के विद्यार्थी प्रतियोगितामें शामिल हो सकते हैं। उपर दिये गये चित्रमें अपने मनचाहें कैमल रंग भर दिजिए। अपने रंगीन प्रवेश-पत्र नीचे दिये गए पते पर भेजिए P.B. No. 9928, COLABA, Bombay-400005.

परिणाम का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा। और कोई भी पत्रव्यवहार, नहीं किया जाएगा।

Name.. Age..................

Address..

कृपया अपना नाम और पता अंग्रेज़ी में लिखिए।

CONTEST NO 20

कृपया ध्यान रखिए कि पूरा चित्र पेंट किया जाये।

चित्र भेजने की अंतिम तारीख: 31-7-1981

बिन्दुओं रेखाके साथ काटिये

Vision

अप्सरा और नटराज पेंसिलें
रंगबिरंगी डिज़ाइनों में
इनसे लिखना इन्द्रधनुष से लिखना

अप्सरा व नटराज

पेंसिल: लंबी उम्र, मज़बूत दिल.

BM 4714 HN

हरा
रूपहला
नारंगी
रूपहला
लाल
रूपहला
पीला
PARLE POPPINS
शकल की नकल नहीं चलेगी!
असली पॉपिन्स
अब रुपहली धारियोंवाले रैपर में मिलेंगी!
बच्चो, बिलकुल ताज़ा खबर सुनो ! अब नक्काल तुम्हें धोखा नहीं दे पायेंगे. तुम तो बस इतना करो, कि पॉपिन्स के रंगबिरंगे पैक पर रुपहली धारियां देख कर तसल्ली कर लो. बस, फिर पॉपिन्स के रसीले मज़ेदार, फलों-से स्वाद का मज़ा लेते जाओ.
पहले रूपहली धारियाँ देख लो फिर रसीले स्वाद का मज़ा लो.
पारले
पॉपिन्स
अब नक्कालों की चालें नहीं चलेंगी.